राष्ट्रीय दैनिक

बुद्ध का संदेश

हिन्दी समाचार पत्र

लखनऊ,कानपुर,कन्नौज,बरेली,सीतापुर,सोनभद्र,गोण्डा,बाराबंकी,बलरामपुर,श्रावस्ती,बहराइच,अम्बेडकरनगर,फैजाबाद, बस्ती, संतकबीरनगर,गोरखपुर,कुशीनगर,देवरिया,महराजगंज,सिद्धार्थनगर में एक साथ प्रसारित।

तेजस्वी प्रकाश और करण कुंद्रा का हुआ...8

दैनिक बुद्ध का संदेश | 9795951917,9415163471 | @budhakasandesh | budhakasandeshnews@gmail.com | www.budhakasandesh.com

शनिवार, 11 मार्च 2023 सिद्धार्थनगर संस्करण | www.budhakasandesh.com | वर्षः 10 अंकः 79 पृष्ठ 8 आमंत्रण मूल्य 2/–रूपया

लखनऊ सुचीबद्ध कोड– SDR-DLY-6849, डी.ए.वी.पी.कोड–133569 | सम्पादक : राजेश शर्मा | उत्तर प्रदेश सरकार एवं भारत सरकार (DAVP) से सरकारी विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

दिल्ली आबकारी नीति मामले में मनीष सिसोदिया फिलहाल तिहाड़ में रहेंगे, जमानत पर सुनवाई 21 मार्च को होगी

नई दिल्ली। दिल्ली आबकारी नीति मामलारू सीबीआई मामले में मनीष सिसोदिया की जमानत याचिका पर सुनवाई 21 मार्च को स्थगित कर दी है। अदालत ने हालांकि प्रवर्तन निदेशालय के आरोप पर अपना आदेश सुरक्षित रख लिया। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने दिल्ली के पूर्व उपमुख्यमंत्री और आप के वरिष्ठ नेता मनीष सिसोदिया को राउज एवेन्यू कोर्ट में पेश किया। ईडी ने अपनी अर्जी में आबकारी नीति मामले में मनीष सिसोदिया की 10 दिन की हिरासत मांगी थी। उनकी गिरफ्तारी की अवधि बढ़ाने को लेकर कोर्ट में सुनवाई चल रही है। ईडी ने सुनवाई के दौरान कहा कि विशेषज्ञ समिति के सुझाव को स्वीकार नहीं किया गया, लाभ मार्जिन बढ़ाया गया और दक्षिण भारत समूह को लाभ हुआ। सुनवाई के दौरान प्रवर्तन निदेशालय ने दिल्ली की अदालत को बताया कि मनीष सिसोदिया ने अन्य लोगों के नाम से सिम कार्ड और मोबाइल फोन खरीदे थे। यह मनीष सिसोदिया से पूछताछ के लिए 10 दिन की हिरासत की मांग कर रहा है ताकि मॉडस ऑपरेंडी की पहचान की जा सके और अन्य लोगों को समन किया जा सके। ईडी ने दावा किया कि 100 करोड़ रुपये की रिश्वत दी गई। जांच एजेंसी ने अदालत में तर्क दिया कि ष्खुदरा विक्रेता को भारी मात्रा में लाभ दिया गया। नीति के निर्माण में त्रुटि थी। थोक विक्रेताओं को 12 प्रतिशत लाभ मार्जिन रखा गया था जो नीति के विरुद्ध था। लाभ बढ़ाने के मामले में मनीष सिसोदिया का बयान दूसरों से अलग है।ष मार्जिन। उनका कहना है कि पिछली गणना के आध ार पर थोक विक्रेताओं को लाभ मार्जिन दोगुना कर दिया गया था। जबकि जीओएम में ऐसी कोई चर्चा

नहीं हुई। ईडी पर पलटवार करते हुए, मनीष सिसोदिया की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता दयान कृ ष्णन ने कहा, ष्अदालत गिरफ्तारी के समय की अनदेखी नहीं कर सकती है और गिरफ्तारी को दुर्भावनापूर्ण और एक व्यक्ति को निरंतर हिरासत में रखना कह सकती है।ष दिल्ली शराब नीति घोटाले में घंटों की पूछताछ के बाद सिसोदिया को गुरुवार को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने गिरफ्तार किया था। सिसोदिया पहले से ही 20 मार्च तक न्यायिक हिरासत में दिल्ली की तिहाड़ जेल में बंद हैं। अधि ाकारियों ने कहा कि ईडी ने मनीष सिसोदिया को आबकारी नीति मामले से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग के आरोप में गिरफ्तार किया है। दिल्ली के पूर्व डिप्टी सीएम से ईडी ने 9 मार्च को अब खत्म हो चुकी शराब नीति के संबंध में 6 घंटे से अधिक समय तक पूछताछ की थी। ईडी द्वारा सिसोदिया की गिरफ्तारी पर बोलते हुए केजरीवाल ने कहा, ष्मनीष को पहले सीबीआई ने गिरफ्तार किया था। सीबीआई को कोई सबूत नहीं मिला, छापे में कोई पैसा नहीं मिला। कल जमानत पर सुनवाई है। मनीष को कल रिहा कर दिया जाता। इसलिए आज ईडी ने उन्हें गिरफ्तार किया। उनका एक ही मकसद है– मनीष को हर कीमत पर जेल के अंदर रखना। रोज नए–नए फर्जी केस बनाकर। जनता देख रही है, वे जवाब देंगे...ष उन्होंने कहा कि तिहाड़ जेल में दूसरे दौर की पूछताछ के बाद 51 वर्षीय को धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत गिरफ्तार किया गया। ईडी ने आरोप लगाया कि सिसोदिया अपने जवाबों में टालमटोल कर रहे थे और ष्जांच में सहयोग नहीं कर रहे थे।ष 2021–22 के लिए दिल्ली शराब या आबकारी नीति के निर्माण और कार्यान्वयन में कथित भ्रष्टाचार के सिलसिले में 26 फरवरी को सीबीआई द्वारा गिरफ्तार किए जाने के बाद सिसोदिया वर्तमान में न्यायिक हिरासत में हैं। ईडी द्वारा सिसोदिया से पहले दौर की पूछताछ 7 मार्च को हुई थी।

च3एन2 वायरस : तेजी से फैल रहा है खतरनाक एच3एन2 वायरस, इस राज्य में हुई पहली मौत

बंगलुरु। बर्बर खांसी इन दिनों घर–घर में कहर ढा रही

है। खांसते–खांसते लोगों के फेफड़े हिल जाते हैं। सांस फूलने लगती है, गले में दर्द होने लगता है। कई बार तो पूरी रात खांसते हुए गुजर जाती है। एच3एन2 के रूप में जाना जाने वाला इन्फ्लूएंजा वायरस लोगों को रेस्पिरेटरी प्रॉब्लम दे रहा है। ये इन्फ्युएंजा ए वायरस का एक सबटाइप है जो पहले कई इन्फ्लूएंजा के प्रकोपों का कारण रहा है। अब एच3एन2 इन्फ्लुएंजा से कर्नाटक में एक की मौत की खबर सामने आई है। कर्नाटक में पहली मौत : कर्नाटक में एच3एन2 विषाणु से होने वाले इन्फ्लूएंजा से एक व्यक्ति की मौत हो गई है। स्वास्थ्य मंत्रालय के सूत्रों के मुताबिक, व्यक्ति हासन जिले का रहने वाला था। भारत में पिछले कुछ महीनों में हजारों मामलों की रिपोर्ट करने वाले देश भर के अस्पतालों के साथ एच3एन2 इन्फ्लूएंजा का अचानक प्रकोप दर्ज किया गया है।

इन्फ्लुएंजा फ्लू से जुड़ी जानने योग्य बातें

वायरस की चपेट में आने से आपको हाई ग्रेड फीवर हो सकता है। इसके साथ ही आपको कंपकपी भी महसूस हो सकती है। रिपोर्ट में बताया गया है कि अधिकतर लोगों ने तेज बुखार महसूस किया है। बुखार के साथ लगातार खांसी भी महसूस हो सकती है। ये खांसी कोई आम खांसी नहीं होती है। ये आपको परेशान कर सकती है। एच3एन2 वायरस से पैदा हुए लक्षण दो से तीन हफ्तों तक रह सकते हैं। ज्यादातर पीड़ितों को दो से तीन दिन तेज बुखार रहता है। इसके साथ बदन दर्द, सिरदर्द और गले में बेचैनी महसूस हो सकती है। खांसी आपको दो से तीन महीने तक रहे सकती है।

शाह ने अहमदाबाद में 154 करोड़ रुपये की विकास परियोजनाओं का उद्घाटन किया

अहमदाबाद। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने

शुक्रवार को अपने गृह राज्य गुजरात के अहमदाबाद शहर में 154 करोड़ रुपये की लागत वाली विभिन्न विकास परियोजनाओं का डिजिटल माध यम से उद्घाटन किया। शाह ने अहमदाबाद नगर निगम (एएमसी) और अहमदाबाद शहरी विकास प्राधिकरण (एयूडीए) द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित एक समारोह को भी संबोधित किया। उन्होंने कहा, ''मेरा (लोकसभा) क्षेत्र गांधीनगर वहां से मेरे सांसद बनने से पहले ही विकसित हो चुका था। हालांकि, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का कहना है कि हमें हर क्षेत्र में अपना सर्वश्रेष्ठ कार्य करना होगा।'' उन्होंने कहा कि सभी सांसदों को अपने–अपने निर्वाचन क्षेत्रों के विकास के लिए कार्य करने की जरूरत है। अहमदाबाद के संथाल में एक नया फ्लाईओवर उन परियोजनाओं में शामिल है, जिसका उन्होंने इस कार्यक्रम के दौरान उद्घाटन किया। इस बारे में उन्होंने कहा, ''सौराष्ट्र और भावनगर बाईपास की ओर जाने वाले वाहनों के कारण संथाल में समस्याएं थीं। इसके अलावा, शहर में यातायात बहुत ज्यादा है। इसलिए संथाल में फ्लाईओवर का निर्माण इन समस्याओं का समाध ान करेगा।'' शाह ने कार्यक्रम के दौरान अपने निर्वाचन क्षेत्र में वरिष्ठ नागरिकों के लिए एक 'स्मार्ट स्कूल' और दो उद्यानों का भी उद्घाटन किया। कार्यक्रम में गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल और एएमसी और एयूडीए के अधिकारी भी मौजूद थे।

मुख्यमंत्री केजरीवाल ने सिसोदिया की तुलना भक्त प्रह्लाद से की, कहा– देश और बच्चों की सेवा करने वाले जेल में

नयी दिल्ली। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने

शुक्रवार को कहा कि देश और बच्चों की सेवा करने वालों को सलाखों के पीछे डाला जा रहा है। केजरीवाल ने पूर्व मंत्री मनीष सिसोदिया को गिरफ्तार किए जाने के घटनाक्रम की तुलना हिरण्यकश्यप और प्रह्लाद की पौराणिक कथा से की। किसी का नाम लिए बिना उन्होंने कहा कि जैसे हिरण्यकश्यप प्रह्लाद को भगवान की पूजा करने से नहीं रोक सका, वैसे ही आज के प्रह्लाद को भी नहीं रोका जा सकता। उन्होंने दिल्ली के पूर्व उप मुख्यमंत्री सिसोदिया की तुलना परोक्ष तौर पर भक्त प्रह्लाद से की। केजरीवाल ने ट्वीट किया, ''हिरण्यकश्यप अपने आपको भगवान् मान बैठा था। उसने प्रह्लाद को ईश्वर की राह से रोकने के अनेक प्रयत्न किये, जुल्म किये। आज भी कुछ लोग अपने आपको भगवान मान बैठे हैं। देश और बच्चों की सेवा करने वाले प्रह्लाद को कारागृह में डाल दिया पर न प्रह्लाद को वे तब रोक पाये थे, न अब रोक पायेंगे।

सौरभ भारद्वाज और आतिशी ने अपने–अपने विभागों का कार्यभार संभाला

नयी दिल्ली। आम आदमी पार्टी (आप) के विधायक सौरभ

भारद्वाज और आतिशी ने शुक्रवार को अपने–अपने विभागों का कार्यभार संभाला। दिल्ली के उपराज्यपाल वी. के.सक्सेना ने बृहस्पतिवार को दोनों को मंत्री पद की शपथ दिलाई थी। आतिशी को शिक्षा, लोकनिर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी), विद्युत और पर्यटन विभाग का कार्यभार दिया जाएगा, जबकि भारद्वाज स्वास्थ्य, शहरी विकास, जल और उद्योग विभाग की जिम्मेदारी संभालेंगे। मनीष सिसोदिया और सत्येंद्र जैन के इस्तीफे के बाद मंत्रिमंडल में दो पद खाली हो गए थे। मनीष सिसोदिया को केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) ने दिल्ली की आबकारी नीति (जिसे अब वापस ले लिया गया है) में कथित अनियमितताओं के मामले में 26 फरवरी को गिरफ्तार किया था। वहीं पिछले साल 30 मई को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने कथित धन शोधन के एक मामले में सत्यैंद्र जैन को गिरफ्तार किया था। दोनों ने हाल ही में मंत्री पद से इस्तीफा दे दिया था। सिसोदिया और जैन दोनों ही इस समय दिल्ली की तिहाड़ जेल में बंद हैं।

सीबीआई के समक्ष पेश हुए वाईएसआर कांग्रेस पार्टी के सांसद अविनाश रेड्डी

हैदराबाद। आंध्र प्रदेश के कडप्पा से वाईएसआर कांग्रेस पार्टी

के लोकसभा सदस्य वाई एस अविनाश रेड्डी 2019 में राज्य के पूर्व मंत्री वाई एस विवेकानंद रेड्डी की हत्या के मामले में शुक्रवार को यहां केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) के अधिकारियों के सामने पेश हुए। अविनाश रेड्डी तीसरी बार केंद्रीय एजेंसी के समक्ष पेश हुए, जो विवेकानंद रेड्डी की हत्या मामले की जांच कर रही है। अविनाश रेड्डी सीबीआई द्वारा समन जारी किए जाने के बाद इस साल जनवरी और फरवरी में सीबीआई के सामने पेश हुए थे। विवेकानंद रेड्डी आंध्र प्रदेश के दिवंगत मुख्यमंत्री वाई. एस. राजशेखर रेड्डी के भाई और आंध्र प्रदेश के वर्तमान मुख्यमंत्री वाई. एस. जगन मोहन रेड्डी के चाचा थे। राज्य में विधानसभा चुनाव से कुछ हफ्ते पहले 15 मार्च, 2019 की रात को पुलिवेंदुला में उनके आवास पर उनकी हत्या कर दी गई थी। इस मामले की जांच शुरू में राज्य अपराध जांच विभाग के एक विशेष जांच दल (एसआईटी) द्वारा की गई थी, लेकिन जुलाई 2020 में इसे सीबीआई को सौंप दिया गया था। सीबीआई ने 26 अक्टूबर, 2021 को हत्या के मामले में आरोपपत्र दायर किया था और इसके बाद 31 जनवरी, 2022 को एक पूरक आरोपपत्र दायर किया था।

विदेश मंत्री जयशंकर ने ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री अल्बनीज से की मुलाकात

नयी दिल्ली। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने शुक्रवार को ऑस्ट्रेलिया के प्रध ानमंत्री एंथनी अल्बनीज से मुलाकात की और भारत–ऑस्ट्रेलिया संबंधों से जुड़े मुख्य पहलुओं पर चर्चा की। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और अल्बनीज के बीच वार्ता से पहले जयशंकर ने ऑस्ट्रेलिया के प्रध ानमंत्री से मुलाकात की। जयशंकर ने ट्वीट किया, '' आज सुबह ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री एंथनी अल्बनीज से मिलकर अच्छा लगा। उनकी यात्रा और आज का वार्षिक शिखर सम्मेलन हमारे संबंधों को उच्च स्तर पर ले जाएगा।''

प्रधानमंत्री मोदी और अल्बनीज के व्यापार एवं निवेश, रक्षा व महत्वपूर्ण खनिजों के क्षेत्रों में समग्र द्विपक्षीय संबंधों को बढ़ावा देने पर व्यापक चर्चा करने की उम्मीद है। मामले की जानकारी रखने वाले लोगों ने बताया कि क्षेत्र में चीन की बढ़ती सैन्य आक्रामकता को लेकर उभरती चिंताओं के बीच दोनों नेता हिंद–प्रशांत क्षेत्र में स्थिति की समीक्षा भी कर सकते हैं। अपनी भारत यात्रा से कुछ दिन पहले अल्बनीज ने कहा था कि भारत–ऑस्ट्रेलिया के बीच मजबूत साझेदारी क्षेत्रीय स्थिरता के लिए बेहतर है। पिछले साल मई में प्रध ानमंत्री बनने के बाद यह उनकी पहली भारत यात्रा है। इससे पहले 2017 में तत्कालीन ऑस्ट्रेलियाई प्रधानमंत्री भारत यात्रा पर आए थे।

जम्मू–कश्मीर में ऐतिहासिक लाल चौक बाजार के घंटा घर का कराया जा रहा है पुनर्निर्माण

श्रीनगर। जम्मू–कश्मीर प्रशासन ने श्रीनगर के ऐतिहासिक लाल चौक बाजार को और खूबसूरत बनाने के लिए प्रसिद्ध घंटाघर के पुनर्निर्माण की पहल की है। स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट के तहत इन दिनों घंटाघर के पुनर्निर्माण का काम तेजी से चल रहा है। हम आपको बता दें कि इंजीनियर नवीनतम तकनीक से इसका पुनर्निर्माण कर रहे हैं।

जब यह बन कर तैयार होगा तो नया घंटा घर समय, तापमान और अन्य महत्वपूर्ण अपडेट प्रदर्शित करेगा। यह आसपास के बाजार की सुंदरता को भी बढ़ाएगा। बताया जा रहा है कि टावर को खूबसूरत

रोशनी से जगमगाया जाएगा और इसकी ऊंचाई भी बढ़ाई जाएगी। अधिकारियों का कहना है कि हमारा प्रयास है कि निर्माण कार्य के दौरान आसपास के लोगों को कम से कम परेशानी हो। वहीं, स्थानीय लोग सरकार के इस कदम की तारीफ करते नहीं थक रहे हैं। उनका कहना है कि जम्मू–कश्मीर प्रशासन जिस तरह से हर क्षेत्र का सौंदर्यीकरण कर रहा है उससे पर्यटन को तो बढ़ावा मिल ही रहा है, स्थानीय लोगों को भी उस पर गर्व हो रहा है। स्थानीय लोगों का कहना है कि हाल के कुछ वर्षों में श्रीनगर को स्मार्ट सिटी बनाने के प्रयास काफी तेजी से हुए हैं।

जिला सड़क सुरक्षा समिति की बैठक संपन्न

दैनिक बुद्ध का संदेश

गोंडा। सड़क सुरक्षा समिति एवं जिला विद्यालय परिवहन सुरक्षा समिति की बैठक कलेक्ट्रेट सभागार में करते हुए जिलाधिकारी डॉ० उज्ज्वल कुमार ने स्कूली वाहनोंध्सरकारी व गैरसरकारी वाहनों की नियमित रूप फिटनेस जाँच कराने, दुर्घटना स्थलों का चिन्हीकरण करने एवं सवारी वाहनों में ओवर लोडिंग पर प्रभावी नियंत्रण कर कार्यवाही करने के निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने जनपद के दुर्घटना बाहुल्य क्षेत्रों एवं ब्लैक स्पॉट के चिन्हांकन के सम्बन्ध में परिवहन अधिकारी, क्षेत्राधिकारी यातायात एवं सम्बन्धित निर्माणदायी संस्था के अधिकारी समस्त चिन्हित ब्लैक स्पॉटों का भौतिक निरीक्षण करने तथा लोक निर्माण विभाग को निर्धारित गति सीमा से संबंधित बोर्ड लगाने के निर्देश दिए। सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने हेतु सड़क सुरक्षा के नियमों का व्यापक प्रचार प्रसार किये जाने हेतु परिवहन एवं पुलिस विभाग को निर्देश दिए। उन्होंने सरकारी विभागों में तैनात सभी वाहन चालकों का कैम्प लगाकर स्वास्थ्य एवं नेत्र परीक्षण कराने के निर्देश दिए। जिला विद्यालय निरीक्षक तथा बेसिक शिक्षा अधिकारी को विद्यालयों में लगे वाहनों का फिटनेस प्रमाण पत्र संबंधित कार्यालय को उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। उन्होंने सभी

विद्यालयों में यातायात के संबंध में जागरूक करने हेतु कार्यक्रम आयोजित करने के निर्देश दिए। साथ ही साथ उन्होंने यह भी सुनिश्चित करने के निर्देश दिए कि किसी भी विद्यालय द्वारा छात्रों को लाने व ले जाने हेंतु ई–रिक्शा का प्रयोग किसी भी दशा में नहीं किया जायेगा। ई–रिक्शा के माध्यम से जाने वाले छात्रों के परिजनों को भी इसके संबंध में सूचित करने के निर्देश दिए। यदि विद्यालयों द्वारा यातायात नियमों का पालन नहीं किया जाता है तो नियमानुसार उनके विरूद्ध कार्यवाही करने के निर्देश दिए। जिन विद्यालयों में अभी तक परिवहन सुरक्षा समिति का गठन नहीं किया गया है उनके विरूद्ध कार्यवाही करने के निर्देश दिए। यातायात नियमों के तहत सीटबेल्ट, हेलमेट आदि का प्रयोग न करने वालों के विरूद्ध अभियान चलाकर कार्यवाही करने के निर्देश दिए। सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी ने अवगत कराया कि समय–समय पर हेलमेट व सीटबेल्ट न लगाने वाले वाहनो के चालकों के प्रति वाहन चौकिंग अभियान चलाया जाता है और उनके वाहन चालको को हेलमेट व सीटबेल्ट लगाने से लाभ व न लगाने से हानि के संबंध में जागरूक किया जाता है। दुर्घटना में घायल व्यक्तियों को चिकित्सीय सहायता के सम्बन्ध में स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिया कि 108 एम्बुलेंस व अन्य एम्बुलेंस की स्थिति को अपडेट रखें। बैठक में जिलाधिकारी द्वारा स्कूल वाहन के सम्बन्ध में उत्तर प्रदेश मोटरयान नियमावली में दिये गये प्राविधानों को बैठक में उपस्थित विद्यालय के प्रतिनिधियों को अवगत कराने एवं जनपद के समस्त विद्यालय के प्राचार्यध प्रबन्धकों को स्कूली वाहनों से सम्बन्धित नियमावली की एक प्रति उपलब्ध कराने के निर्देश दिए। स्पीड लिमिट डिवाइस, जी0पी0एस0 सिस्टम, फर्स्ट एड बाक्स, अग्निशमन यंत्र एवं सी0सी0टी0वी0 की अनिवार्यता का अनुपालन न किये जाने पर स्कूली वाहनों को सीजध्चालान करने के निर्देश दिए। परिवहन एवं पुलिस विभाग को निर्देश दिए कि नियमावली में उपबन्धध शासनादेश को अक्षरशः लागू करायें। उन्होंने कहा कि सघन चौकिंग अभियान चलाते हुए मानक के अनुरूप न पाये जाने वाले स्कूल वाहनों के विरूद्ध कठोरतम कार्यवाही की जाय एवं स्कूल प्रतिनिधियों को निर्देशित किया कि स्कूल वाहनों के सम्बन्धा में नियमावली का अध्ययन कर लें एवं मानक के अनुरूप वाहनों को ठीक कराते हुए वाहन का संचालन करें। स्कूली बच्चों की सुरक्षा में किसी भी एजेंसी द्वारा की गई लापरवाही क्षम्य नहीं होगी। स्कूली वाहनों की जॉच के सम्बन्ध में शासन द्वारा प्रेषित चेक लिस्ट को समस्त स्कूलों को प्राप्त कराने एवं उस चेक लिस्ट के अनुरूप वाहन के संचालन के सम्बन्ध में बिन्दुवार जांच किये जाने हेतु जिलाधिकारी द्वारा निर्देशित किया गया। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी एम. अरुन्मोली, अपर जिलाधिकारी सुरेश कुमार सोनी, सिटी मजिस्ट्रेट अर्पित गुप्ता, जिला विद्यालय निरीक्षक राकेश कुमार तथा अन्य संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

होली में अपनी ससुराल आए युवक का रेलवे ट्रैक पर मिला शव, हत्या का आरोप

दैनिक बुद्ध का संदेश

मोतीगंज,गोण्डा। होली में निमंत्रण खाने अपनी ससुराल आए युवक का शव शुक्रवार को रेलवे ट्रैक पर सरयू रेलवे क्रासिंग के निकट पाया गया,मामले में मृतक के पिता द्वारा ससुराल वालों पर हत्या का आरोप लगाते हुए पुलिस से कार्यवाही की मांग की गई है। मामला करनैलगंज कोतवाली क्षेत्र अन्तर्गत ग्राम पंचायत कटरा शहबाजपुर से जुड़ा है। मामले में ग्राम तिनगाई जनपद बहराइच निवासी लल्लन पुत्र माधव द्वारा कोतवाली पुलिस को तहरीर देकर बताया गया है कि उनका लड़का मुकेश की ससुराल कटरा शहबाजपुर में थी, उसकी शादी शिवकुमार की पुत्री ममता के साथ तीन वर्ष पूर्व हुई थी। होली में ममता अपने मायके कटरा शाहवाजपुर आई थी। बीते 9–3–023 को जितेन्द्र के

8–3–023 को प्रार्थी के पुत्र के मोबइल पर फोन करके विपक्षी गण ने होली का निमंत्रण कहके बुलाया तथा अपने घर से मुकेश को बाँध दिया। इसकी जानकारी तब हुई जब दूसरे दिन मोबाइल पर रात्रि में 11 बजे मुकेश का फोन आया तो मुकेश ने आप बीती बताते हुए कहा कि मुझे बांधकर मारपीट रहे हैं। शुक्रवार को मुकेश का रेलवे ट्रैक पर शव मिलने के बाद मृतक के पिता लल्लन ने मुकेश को जान से मारकर रेलवे लाइन पर फेंक देने का आरोप लगाया गया है तथा कोतवाली में तहरीर देकर मृतक के ससुराल वालों पर मुकेश की हत्या का आरोप लगाते हुए कार्यवाही की मांग की है। घटना की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर विधिक कार्यवाही शुरू कर दी है।

गोंडा में महिला ने फर्जी मुकदमा कराने का लगाया आरोप

दैनिक बुद्ध का संदेश

गोंडा। नवाबगंज थाना क्षेत्र के लौव्वावीरपुर गांव के सिंगाराय पुरवा निवासी महिला ने अपने विपक्षी पर फर्जी मुकदमे में फंसाने की साजिश रचने का आरोप लगाते हुए थाने में तहरीर दी है।पीड़ित महिला सुमन पत्नी माता प्रसाद ने तहरीर में बताया कि 9 मार्च को गांव के ही दबंग राजीव उर्फ पुलाई, सत्यपाल उर्फ घोलर, सुनील और लालजी उसके घर में घुसकर मारपीट की थी। जिसके बाद पुलिस ने तत्काल कार्रवाई करते हुए चारों आरोपियों के विरुद्ध सुसंगत धाराओं में मुकदमा पंजीकृत कर लिया था। पीड़ित परिवार को धमकाया शुक्रवार को पीड़ित

महिला ने थाने पर तहरीर देते हुए कहा कि विपक्षी राजीव यादव उर्फ पुलाई द्वारा पड़ोस के ही पवन पुत्र शिव सेवक के माध्यम से थाने पर तहरीर दिलवाकर उसे और उसके परिजनों को हरिजन एक्ट सहित अन्य फर्जी मुकदमे में फंसाने का प्रयास किया जा रहा है। महिला ने आरोप लगाया कि गुरुवार की रात विपक्षी ने धमकी भी दी है कि तुम्हारे पूरे परिवार पर हरिजन एक्ट लिखवा देंगे। पुलिस जांच में जुटी विपक्षी राजीव द्वारा पवन के माध्यम से अब तक दो बार अलग–अलग तहरीर थाने पर दिलाई जा चुकी है। जिसकी छायाप्रति भी महिला ने उपलब्धा कराई है। पीड़िता ने विपक्षी पर पुलिस को गुमराह करने का आरोप भी लगाया है। इस संबंधा प्रभारी निरीक्षक करूणाकर पांडे ने बताया कि मामले की जांच कराई जा रही है।

अचानक आई बाढ़ से ग्रामीण दहशत में

दैनिक बुद्ध का सन्देश

तुलसीपुर,बलरामपुर। गौरा चौराहा क्षेत्र के निकट तमाम गावों

में अचानक आई बाढ़ से किसान दहशत में आ गये है अभी कुछ माह पूर्व ही बाढ़ ने जबरदस्त तबाही मचाया था जिससे लोगों के खाने नहीं बचा था और तमाम संगठनों सहित सरकार ने भी मदद किया था अचानक आई बाढ़ से ग्रामीण सकतें में आ गये है। अभी पुरानी बाढ़ से टूटी फूटी सडके मरमत हो रही हैं। बताते चलें कि गौरा चौराहा के पास भूसेलवा पहाड़ी नाला है जिसमें बरसात के समय पहाड़ों से उक्त नाले में पानी आने से कई गांव डूब जाते हैं और लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ता है आज अचानक आई बाढ़ से भोसा इलवा नाला के आस पास के निचले हिस्सों में पानी भर गया है और आसपास के ग्रामीण डरे हुए हैं कि पानी और ना आ जाए अगर पानी बढ़ा तो लोगों को समस्या हो सकती है ग्रामीणों ने बताया कि गेहूं मसूरी चना गन्ना सहित कई फसने अभी खेतों में खड़ी हैं यदि ज्यादा पानी आता है तो इनके डूब जाने का खतरा बना हुआ है जिससे किसान दहशत में हैं।

गरीबों को राशन वितरण के लिए आये खाद्यान्न में भारी गड़बड़ी निकले कक्कड़ पत्थर

दैनिक बुद्ध का संदेश

गोंडा। मामला विकासखंड कटरा बाजार की ग्राम पंचायत छपरतल्ला से जुड़ा हुआ है,जहां एक ओर योगी सरकार गरीबों को

निःशुल्क खाद्यान्न उपलब्ध कराने का दावा कर रही है तो वहीं कुछ लोग सरकार के मंसूबों पर पानी फेर रहे हैं। सुबह कोटेदार के यहां वितरण के लिए जब चावल की बोरियां खुलने लगी तो उनमें से भारी मात्रा में कंकड़– पत्थर व गुटके–सिगरेट के पैकेट देखने को मिले।तुरंत कोटेदार ने इसकी सूचना अपने पूर्ति निरीक्षक कटरा बाजार को दी तथा राशन वितरण का कार्य बंद कर दिया। इसकी सूचना लोगों द्वारा एसडीएम कर्नलगंज को भी दी गई एसडीएम कर्नलगंज हीरालाल ने बताया कि जांच हेतु पूर्ति निरीक्षक कटरा बाजार को तुरंत उचित दर विक्रेता की दुकान पर भेजा गया,जहां पूर्ति निरीक्षक द्वारा बोरियों का वजन कराया गया। उन्हें लगभग दो कुंतल अनाज में गड़बड़ी मिली है, गड़बड़ अनाज की बोरियों को तुरंत अलग करवा कर दूसरी बोरियाँ उपलब्ध कराने के निर्देश दिए गए हैं।

रंग में पड़ा भंग होली की खुशी मातम में बदली

होली खेलने के बाद रोहित अपने दोस्तों के साथ तालाब में नहाने गया नाव पलटने से डूबा, मौत

दैनिक बुद्ध का संदेश

गौरा चौकी,गोंडा। खोड़ारे थाना क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम सभा मन्नीजोत डिवलीडीह गांव में बुधवार को तालाब पर दोस्तों के साथ होली खेलने गए 17 वर्षीय युवक की डूबकर मौत हो गई। मृत युवक का नाम रोहित जायसवाल है। इस दर्दनाक घटना से गांव में होली की खुशियां मातम में तब्दील हो गई। ग्रामीणों के मुताबिक रोहित जायसवाल अपने 6 दोस्तों के साथ होली खेल रहा था की होली खेलते खेलते गांव के ही समीप नानह तालाब पर नहाने लगे इस दौरान मछुआरों की नाव लेकर अपने दोस्तों के

साथ तालाब में घूमने लगा अचानक गहरी पानी में नाव पलट गई। जिसे नाव पर सवार सभी बच्चे डूबने लगे। उसके साथ मौजूद उसके दोस्तों ने उसे बचाने की कोशिश की लेकिन वह कामयाब नहीं हो सके। उसके बाद उन्होंने शोरगुल मचाया तो तालाब पर ग्रामीणों की भीड़ जुटने लगी। मौके पर पहुंचे ग्रामीणों ने रेस्क्यू कर बाहर निकाला आनन–फानन में सीएचसी केंद्र बभनजोत पर ले गए जहां पर मौजूद चिकित्सकों ने रोहित जयसवाल 18 वर्षीय पुत्र जग प्रसाद को मृत घोषित कर दिया। जिससे होली की खुशियों में डूबे गांव देखते ही देखते कोहराम मच गया। मृतक युवक के दादी मायावती के मुताबिक गांव के ही लड़के विजय कुमार, अनुज, पन, जितेंद्र के साथ दोपहर को तालाब पर नहाने गया था कि वहां पर मछुआरों की नाव को लेकर तालाब में घूमने लगा गहरे पानी में नाव पलट गई जिस यह बड़ा हादसा हो गया। उन्होंने बताया कि मैं किसी भी प्रकार की कोई कार्रवाई नहीं चाहती हूं। इस बावत गौरा पुलिस चौकी प्रभारी दिनेश कुमार राय ने बताया कि मुझे इस संबंध में कोई सूचना नहीं है।

पुलिस ने किया बैंक चेकिंग खाताधारकों को किया जागरूक

दैनिक बुद्ध का संदेश

अलावल देवरिया,गोंडा। थाना तरबगंज के पुलिस चौकी भानपुर

चौकी प्रभारी ने हमराही सिपाहियों के साथ बैंक चेकिंग कर सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया। चौकी प्रभारी सोम प्रताप सिंह ने बताया कि शुक्रवार को भानपुर चौकी क्षेत्र के अंतर्गत पकड़ी बाजार में स्थित इंडियन बैंक पर हमराही सिपाहियों के साथ पहुंचकर बैंक चेकिंग किया गया। और बैंक पर आए हुए खाताधारकों को जागरूक करते हुए बताया गया कि बैंक से संबंधित जरूरी कागजात व बैंक पासबुक अपने पास रखें तभी बैंक के अंदर जाएं और अराजक तत्वों से सावधान रहें। वहीं सुरक्षा व्यवस्था में लगे सुरक्षाकर्मियों तथा बैंक कर्मचारियों को जागरूक किया गया।

गोंडा जिला पंचायत की बैठक संपन्न

दैनिक बुद्ध का संदेश

गोंडा। अध्यक्ष, जिला पंचायत, गोण्डा की अध्यक्षता में

जिला पंचायतरू गोण्डा की सामान्य बैठक आहूत की गई जिसमें जिला पंचायत, गोण्डा का पुनरीक्षित बजट वर्ष 2022 2023 का रू० 87,39,63,364.00 एवं वित्तीय वर्ष 2023 दृ2024 का मूल बजट रु० 50,89,90,850. 00 का सदन द्वारा सर्वसम्मति से अनुमोदित किया गया। पंचम राज्य वित्त आयोग योजनान्तर्गत वित्तीय वर्ष 2023दृ2024 हेतु परिसम्पत्ति एवं रख रखाव, अनुरक्षण एवं नवनिर्माण हेतु रू० 20,60,28,000.00 तथा पन्द्रहवाँ वित्त आयोग योजनान्तर्गत वित्तीय वर्ष 2023 दृ 2024 हेतु टाइड मद में नाला, अमृत सरोवर, शौचालय आदि हेतु रूप 15,54,93,800.00 एवं अनटाइस मद में सम्पर्क मार्गो हेतु रू0 10,36,64,000.00 की कार्ययोजना सदन द्वारा सर्वसम्मति से अनुमोदित की गई। बैठक में वित्तीय वर्ष 2023–2024 की ग्राम पंचायत एवं क्षेत्र पंचायत की समेकित विकास योजना भी अनुमोदित की गई। इसके अतिरिक्त वित्तीय वर्ष 2023दृ2024 के मनरेगा योजनान्तर्गत 65.36. 455 मानव दिवस व लेबर बजट 23,20,40,418.00 का सदन द्वारा अनुमोदित किया गया। इस अवसर पर प्रतीक भूषण शरण सिंह विधायक सदर, बावन सिंह मा० विधायक कटरा बाजार श्री अजय सिंह विधायक करनैलगंज, अवधेश कुमार सिंह उर्फ मन्जू सिंह मा० सदस्य विधान परिषद, गोण्डाध्बलरामपुर अमरीश दत्त सिंह, महेन्द्र सिंह, अनवर शकील, ई० चन्द्र प्रकाश सिंह मनोज शुक्ला, अर्चना सिंह, रीतू पासवान, अंकिता सिंह, अनामिका सिंह इन्द्रावती मालती देवी आदि सदस्यगण जिला पंचायत, मात्र प्रमुखगम क्षेत्र पंचायत मुख्य विकास अधिकारी, मुख्य चिकित्साधिकारी तथा अन्य जनपदस्तरीय अधिकारीगण उपस्थित रहे। बैठक का संचालन सचिव श्री राजेश कुमार चौधरी, अपर मुख्य अधिकारी द्वारा किया गया।

दिन दहाड़े किराना व्यापारी से साढ़े चार लाख की हुई लूट

दैनिक बुद्ध का संदेश

अलावल देवरिया गोण्डा।शुक्रवार दोपहर कोतवाली देहात के

सालपुर चौकी अंतर्गत बग्गी रोड पर किराने की दुकान कर रहे थाना इटियाथोक के तीत गांव करूवा पारा निवासी चंद्र प्रकाश पांडे अपनी किराने की दुकान से साढ़े चार लाख लेकर एक टेंपो पर सवार होकर गोंडा की तरफ आ रहे थे,तभी थोड़ी दूर चलने पर अज्ञात कार से अज्ञात लोगों द्वारा टैंपू को ओवरटेक करके रोक लिया गया और व्यापारी से लूट कर फरार हो गए,लुटेरों के संबंध में बदमाशों के गिरफ्तारी के लिए एसओजी सहित कई टीमों को गठित कर शीघ्र गिरफ्तारी करने का निर्देश दिया गया है। बताते चलें सालपुर चौकी क्षेत्र में अपराध और अपराधियों की बाढ़ आ गई है। जिसका परिणाम यह रहा कि आए दिन चोरी की घटनाएं होती रही, लेकिन उसकी रिपोर्ट नहीं लिखी जाती थी,पीड़ितों की मदद न कर केवल दबंगों की मदद की जाने की आम शिकायत रही। जिससे यहां के आम लोग परेशान और हलकान थे और आज यह बड़ी घटना घटित हो गई।

स्थानीय मछुवारों की मदद से 23 घंटे बाद मिली डूबे 3 युवकों की लाश,एसडीआरएफ की टीम रही नाकामयाब

दैनिक बुद्ध का सन्देश

शोहरतगढ़,सिद्धार्थनगर। शोहरतगढ़ थाना क्षेत्र के अन्तर्गत बानगंगा नदी में नौ लोग नहाने गए थे जिसमे से तीन युवक की डुबने से मौत हो गयी। जानकारी के मुताबिक होली के दिन बुध वार को शोहरतगढ़ थाना क्षेत्र के बानगंगा बैराज के पूरब की तरह बानगंगा नदी में नहाने नौ युवक पहुंचे थे जिसमें निखिल उर्फ अजीत सिंह पुत्र राधेरमण सिंह उम्र 18 वर्ष, विक्की सिंह पुत्र अरुण सिंह उम्र 19 वर्ष निवासी बड़गो थाना चिल्हिया व उज्जवल पुत्र देवेश मणि त्रिपाठी उम्र 19 वर्ष निवासी ग्राम पंचायत सैनुआ थाना लौटन व भीमापार थाना सिद्धार्थ नगर लगभग ढाई बजे नहाते समय पानी मे डूब गए उनको डूबता देख बाकी साथियों ने शोर मचाया तो भारी संख्या में ग्रामीण इकट्ठा हो गए। घटना की सूचना पाकर थानाध्यक्ष शोहरतगढ़ पंकज पाण्डेय मौके पर पहुंचे। घटना की जानकारी अपने उच्च अधिकारियों को दी। मौके पर जिलाधिकारी सिद्धार्थनगर संजीव रजन, पुलिस अधीक्षक अमित कुमार आनंद, एएसपी सिद्धार्थ, सांसद डुमरियागंज जगदम्बिका पाल व प्रधान संगठन के जिलाध्यक्ष पवन मिश्रा, सिद्धार्थ सीओ जयराम, एसडीएम प्रदीप कुमार, सीओ जयराम, तहसीलदार राजेश कुमार भी पहुंच गए।रात लगभग सात बजे एसडीआरएफ की टीम गोरखपुर से पहुची। एसडीआरएफ की टीम व आसपास के गोताखोरों की मदद से वह बताए हुए स्थान पर तलाश करवाने लगे। लेकिन रात नौ बजे तक किसी का कोई पता नहीं चला। गोताखोरों की मदद से बृहस्पतिवार की सुबह भी तलाश की गई। युवकों को खोजने में आधुनिक उपकरणों का भी सहारा लिया गया, लेकिन सफलता नही मिली। इसी कड़ी में दूसरे दिन भी स्थानीय मछुआरों ने पानी मे तलाश की, लेकिन कामयाबी नही मिली, इसके बाद 1 बजे के आसपास जब मछली मारने वाले जाल से तलाशी शुरु की, तो काफी मसक्कत के बाद करीब 2 बजे 3 युवक जाल की पकड़ में आ गए।इसके पूर्व सुबह 8 बजे से स्थानीय गोताखोर समेत एसडीआरएफ की टीम युवकों को खोजने में लगी रही लेकिन कामयाबी स्थानीय मछुवारों को मिली।

- **मातम में बदला खुशियों का त्यौहार, गाँव मे पसरा सन्नाटा**
- **घटना स्थल पर डीएम-एसपी समेत पूर्व मंत्री व सांसद जगदम्बिका पाल व भाजपा पदाधिकारियों समेत डा पवन मिश्रा आदि हजारों की संख्या रहे मौजूद।**

बिस्कोहर में हुआ सामूहिक विवाह का आयोजन,सासंद दिया आर्शीवाद

वरिष्ठ समाजसेवी राजेश अवस्थी उर्फ कालिया बाबा ने किया सामूहिक विवाह का आयोजन

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सिद्धार्थनगर। सांसद ने वर वधू को दिया आशीर्वाद नगर पंचायत बिस्कोहर के हनुमान नगर वार्ड सिकोथा के वरिष्ठ समाजसेवी राजेश अवस्थी उर्फ कालिया बाबा द्वारा सामूहिक विवाह का आयोजन का सिकोथा के काली जी मन्दिर प्रांगण में पांच जोड़ा शादी सम्पन्न हुआ सामुहिक शादी दो शादी ऐसा हुआ है कि पूर्ब में दो बेटियों के सिर से पिता का साया हट गया था जिसमे एक सिकरा निवासिनी शिवली सिंह की शादी बसन्त पुर निवासी उमा शंकर सिंह मुड़ीला तिवारी निवासी सरिता कनौजिया का शादी भरौली निवासी नीरज के साथ सम्पन्न हुआ सिकोथा निवासी ममता गौतम का शादी हसुडी निवासी राजेश गौतम से हुआ सिकोथा निवासी प्रियंका का शादी दर्जिनया डिहवा निवासी राहुल के साथ सम्पन्न हुआ वही बिस्कोहर निवासी मंजू का शादी उतरौला निवासी हनुमान के साथ सम्पन्न हुआ इस सामूहिक विवाह का साक्षी बनने अवध धाम से पधारे रामदिनेशाचार्य महाराज डुमरियागंज के सांसद जगदंबिका पाल नेवी इस सामूहिक विवाह के साक्षी बनकर नव दंपति को शुभकामना दिया सांसद ने कहा की सामूहिक विवाह का आयोजन कर कर के वरिष्ठ समाजसेवी राजेश अवस्थी और कालिया बाबा द्वारा एक ऐतिहासिक कार्य किया गया है सच्ची सेवा यही है कि हर बेटी को अपना बेटी मानना हर मां को अपना मामा ना यही सच्ची जनसेवा है यीशु मंदिर प्रांगण में रामकथा का भी आयोजन वह भंडारा हो चुका है यह तीसरा कार्यक्रम है जो सामूहिक विवाह कन्या यज्ञ के रूप में किया जा रहा है जिसमें कालिया बाबा के द्वारा 5 जोड़ी सामूहिक विवाह करा कर ऐतिहासिक कार्य किया गया है जिसमें लड़की की विदाई के समस्त सामान भी दिया गया है इस अवसर पर डुमरियागंज क्षेत्राधिकारी राणा महेंद्र प्रताप सिंह थाना अध्यक्ष सूर्य प्रकाश सिंह मैं फोर्स के साथ तैनात रहे इस अवसर पर पप्पू सिंह ओमप्रकाश तिवारी रामकरन अवस्थी अखंड पाल रामकृपाल चौधरी रामनिवास उपाध्याय सरोज शुक्ला श्यामसुंदर अग्रहरि विद्यासागर चौधरी बुधई गुप्ता साधु अवस्थी गणेश वरुण मोनू श्रीवास्तव अरुण श्रीवास्तव राजेश द्विवेदी दीपक तिवारी शिवम सोनी असलम सौरभ देवेंद्र सिंह आदि लोग।

ग्राम चौपाल में मुख्य विकास अधिकारी ने रोका ग्राम सचिव का वेतन

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सिद्धार्थनगर। जयेंद्र कुमार, मुख्य विकास अधिकारी ने विकास खण्ड बढ़नी के ग्राम पंचायत धनधरा मे आयोजित ग्राम चौपाल में प्रतिभाग किया गया। चौपाल में संजय कुमार, खण्ड विकास अधिकारी, बढ़नी, एम.ओ.आई.सी., सी.डी.पी.ओ. सहित राजस्व, कृषि, पशुपालन सहित सभी विभाग के प्रतिनिधि उपस्थित रहे। अनुपस्थित ग्राम सचिव का वेतन बाधित करते हुए कार्यवाही करने का निर्देश दिया गया। भारत सरकार एवम उ.प्र. शासन द्वारा संचालित सभी लाभार्थी परक योजनाओं एवम जन कल्याणकारी योजनाओं के लक्ष्यों की पूर्ति एवम लाभार्थी का सत्यापन किया गया। पीडीएस राशन वितरण एवम बाल विकास विभाग द्वारा ड्राई राशन किट वितरण का सत्यापन प्रमाणीकरण लाभार्थी से किया गया। कोटेदार, आंगनवाड़ी, सफाई कर्मी, प्राथमिकी विद्यालय के शिक्षक के कार्य व्यवहार के सम्बन्ध में ग्राम वासियों से जानकारी प्राप्त किया गया। ग्राम वासियों द्वारा सभी के कार्यों को संतोषजनक बताया गया। सभी ग्राम वासियों से आयुष्मान भारत योजना से आयुष्मान कार्ड का निर्माण कराने तथा सामुदायिक शौचालय का प्रयोग करने पेंशन योजनाओं में आधार जोड़ने का अनुरोध किया गया। खण्ड विकास अधिकारी को निर्देशित किया गया कि ग्राम में सभी चक मार्ग की सूची प्राप्त कर उप जिलाधिकारी के सहयोग से उनको कब्जा मुक्त कराकर मनरेगा से मिट्टी पटाई करना सुनिश्चित करें।

भाजपा ने किया विधानसभा के तीनों निकायों में होली मिलन समारोह का आयोजन

होली रंगों के साथ साथ खुशी और सदभाव का त्यौहारः राघवेंद्र सिंह

दैनिक बुद्ध का सन्देश

डुमरियागंज,सिद्धार्थनगर। सिद्धार्थनगर। भारतीय जनता पार्टी द्वारा विधानसभा के नगर पंचायत डुमरियागंज, बढनीचाफा, भारतभारी में होली मिलन समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि पूर्व विधायक राघवेन्द्र प्रताप सिंह ने सभी के ऊपर गुलाब व गेंदा पुष्प के पंखुड़ियों से वर्षा कर बधाई एवं शुभकामनाएं दिया। वही उपस्थित सभी नगर वासियों, गणमान्यजनों व कार्यकर्ताओं ने एक–दूसरे को गुलाल लगाकर होली की शुभकामनाएं दी। इस दौरान डॉ सत्य प्रकाश अग्रहरि द्वारा शिव तांडव का पाठ कर माहौल पूरा भक्तिमय बनाया गया, जिससे पूरा प्रांगण ध नमः शिवाय और जय महाकाल के नारों से गूंज उठा। सभी को सम्बोधित करते हुए राघवेन्द्र प्रताप सिंह ने कहा कि होली रंगों, सकारात्मकता, जीवंतता, खुशी और सद्भाव से जुड़ा त्योहार है। मैं सभी के जीवन में सुख, शांति, सौभाग्य एवं समृद्धि की कामना करता हूं, भाजपा कार्यकर्ता नई ऊर्जा के साथ कमर कस के कमल खिलाने का कार्य कर सके इसी को लेकर फाग उत्सव एवं कार्यकर्ता होली मिलन समारोह का आयोजन किया गया है। ऐसे आयोजन आज के परिवेश में होना चाहिए। जिसमें आप सभी अपना आपसी रंजिश भूलकर प्रतिभाग करें और एक दूसरे से गले मिलकर सारे गिले–शिकवे भुलाकर सामाजिक समरसता कायम करें। उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा कि पिछली सरकारों में केवल तुष्टिकरण की राजनीति होती थी जबकि भाजपा सरकार में सबका साथ सबका विकास के मूल मंत्र पर सुख समृद्धि और लोकहित, जनहित और जनकल्याणकारी कार्य कर रही हैं, जिसको जनता द्वारा सराहा भी जा रहा हैं। होली मिलन समारोह नगर पंचायत डुमरियागंज के रामलीला मैदान प्रांगण में मण्डल अध्यक्ष अमरेंद्र त्रिपाठी, भारतभारी के मोतीगंज चौराहे पर उदयशंकर श्रीवास्तव, बढ़नी चाफा के रामदीन जूनियर हाई स्कूल प्रांगण में राजकुमार चौधरी की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। इस दौरान नीरा दुबे, प्रियंका श्रीवास्तव, शिवनाथ चौधरी, मधुसूदन अग्रहरि, अशोक अग्रहरि, गौरव मिश्रा, राजीव अग्रहरि, शत्रुहन सोनी, दिलीप उर्फ छोटू पाण्डेय, रमेश सोनी, विनय पाठक, लक्की शुक्ला, कमलेंद्र त्रिपाठी, राम कुमार अग्रहरि, बजरंगी अग्रहरि, चंद्रभान अग्रहरि, धर्मराज वर्मा, अमेरिका प्रसाद वर्मा, संतोष गुप्ता, अजय वर्मा, बद्रीविशाल गुप्ता, आकाश सोनी, प्रमोद गौतम, संतोष पासवान, दीपक चौधरी, विजय पाण्डेय, चंद्रप्रकाश चौधरी, माधवेंद्र मिश्रा, सतीश चन्द्र श्रीवास्तव, आदि सहित भारी संख्या में नगरवासी व सभी मोर्चा और प्रकोष्ठ के अध्यक्ष एवं संयोजक सहित बड़ी संख्या में पदाधिकारीगण तथा कार्यकर्तागण उपस्थित रहे।

हमला करने वाला गिरफ्तार कर भेजा गया जेल

दैनिक बुद्ध का संदेश

गोलाबाजार। जिला पुलिस मुखिया डा गौरव ग्रोवर के निर्देशन व पुलिस अधीक्षक ग्रामीण दक्षिणी अरुण कुमार सिंह सी ओ गोला व थानाध्यक्ष गोला अश्वनी कुमार तिवारी के पर्यवेक्षण में उपनिरीक्षक गुरू प्रसाद द्वारा मय हमराही मुकदमा अपराध संख्या 92ध्2023 धारा 147 148 323 504 506 352 307 आई पी सी में बांछित अभियुक्त रजत पुत्र रामा प्रसाद निवासी वेवरी को मुखबीर की सूचना पर श्यामघाटगोला से शुक्रवार को दिन लगभग एक बजे गिरफ्तार कर लिया। बताते चले कि बीते बुधवार को होली के दिन गांव के ही शैलेश को जान से मारने की नीयत से उसके गर्दन पर धारदार ब्लेड से मार कर घायल कर दिया था। घटना में प्रयुक्त धारदार ब्लेड भी बरामद हुआ है । गोला पुलिस ने गिरफ्तार अभियुक्त को जेल भेज दिया। गिरफ्तार करने वालो में प्रमुख रूप से एस आई गुरुप्रसाद कांस्टेबल दीपक भारती रामनयन रहे।

सम्पादकीय

खतरे में जैव विविधता

वैज्ञानिक अब इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि इस वक्त जिस तेजी से प्रजातियां विलुप्त हो रही हैं, वह पिछली किसी भी ऐसी घटना से ज्यादा तेज है। उन्होंने कहा है– ष्हम उस बिंदु का पूर्वानुमान तो नहीं लगा सकते, जहां पहुंचने के बाद पारिस्थितिकी तंत्र पूरी तरह नष्ट हो जाएगा, लेकिन जैव विविधता को खत्म होने से नहीं रोका...

वैज्ञानिकों की चेतावनी है कि हम उस बिंदु का पूर्वानुमान तो नहीं लगा सकते, जहां पहुंचने के बाद पारिस्थितिकी तंत्र पूरी तरह नष्ट हो जाएगा, लेकिन जैव विविधता को खत्म होने से नहीं रोका गया, तो ऐसा होना तय है। जैव विविधता खतरे में है, यह कोई नई जानकारी नहीं है। लेकिन इस बारे में आने वाली हर नई जानकारी चिंता बढ़ाती है, तो इसलिए कि इसका असर मनुष्य पर भी होना तय है। पूरी दुनिया एक साझा परिवास है, जिसमें जैविक संतुलन बिगडने का मतलब सबके लिए खतरा बढना है। अब वैज्ञानिकों ने कहा है कि जानवरों की जो प्रजातियां जंगलों में खत्म हो चुकी हैं, उनका चिडियाघरों में रह रहे जीवों के जरिए उबरना बेहद कठिन है। एक नए अध्ययन के बाद विशेषज्ञों ने कहा कि प्राकृतिक आवासों में जिन जानवरों की संख्या दस से कम हो चुकी है, उनकी आबादी बढ़ाने के लिए अक्सर चिडियाघरों से जीवों को जंगलों में छोड़ा जाता है।

लेकिन इससे आबादी बढना मुश्किल है। कारण यह है कि जिन कारणों से जानवरों की संख्या घटी थी, वे ज्यों के त्यों बने हुए हैं। जिन खतरों ने इन जानवरों को विलुप्ति के कगार पर पहुंचाया है, वे जंगल में दोबारा भेजे गए प्राणियों के सामने भी बने होते हैं। इनमें जैविक विविधता की कमी और अवैध शिकार आदि शामिल हैं। हालांकि वैज्ञानिक संरक्षण की कोशिशों को भी जरूरी मानते हैं और अध्ययनकर्ताओं ने स्वीकार किया है कि अगर ऐसी कोशिशें ना की गई होतीं, तो ये जानवर बहुत पहले विलुप्त हो चुके होते। 1950 से अब तक लगभग 100 प्रजातियां ऐसी हैं, जो विलुप्त हो चुकी हैं। इसकी मुख्य वजहों में अवैध शिकार, वनों का कटाव, घटते कुदरती रहवास आदि खतरे शामिल हैं। वैज्ञानिक अब इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि इस वक्त जिस तेजी से प्रजातियां विलुप्त हो रही हैं, वह पिछली किसी भी ऐसी घटना से ज्यादा तेज है। उन्होंने कहा है– ष्हम उस बिंदु का पूर्वानुमान तो नहीं लगा सकते, जहां पहुंचने के बाद पारिस्थितिकी तंत्र पूरी तरह नष्ट हो जाएगा, लेकिन जैव विविधता को खत्म होने से नहीं रोका गया, तो ऐसा होना तय है।ष जाहिर है, इससे ज्यादा दो–टूक चेतावनी नहीं दी जा सकती। लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण है कि ऐसी खबरों को ना तो मीडिया में जगह मिलती है, ना उस पर राजनीतिक दायरे में चर्चा होती है। नतीजतन, खतरा बढ़ता ही जा रहा है।

पहली राम कथा हनुमान जी ने सुनाई थी

भगवान श्रीराम का चरित्र महनीय और वंदनीय है। उनकी मर्यादा और उनका लोकधर्म तपस्वित ओजस्विता से परिपूर्ण था। यही कारण था कि देवताओं, ऋषियों और मुनियों ने प्रभु श्रीराम के जीवन को आधार बनाकर भिन्न भिन्न तरह से श्री राम की कथा को सुनाया जन जन में व्याप्त होने वाली राम कथा को पहली बार भगवान श्री राम के भक्त श्री हनुमान जी ने लिखी थी। इसके बाद महर्षि वाल्मीकि ने रामायण की रचना की। जनश्रुतियों के मुताबिक पवन पुत्र श्री हनुमान जी ने इसे एक शिला पर लिखा था। ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर राजा भोज ने इस शिलालेख को खोज निकाला था। ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर श्री हनुमान जी ने समुद्र के किनारे बैठकर श्री राम कथा की रचना की थी। श्री हनुमान जी द्वारा रचित राम कथा चारों तरफ लोकप्रिय हो रही थी किंतु महर्षि वाल्मीकि के प्रति अतुलनीय श्रद्धा के वशीभूत होकर अपनी राम कथा रचित शिला को समुद्र देव के हवाले कर दिया तत्पश्चात मुनि वाल्मीकि ने श्री राम कथा को रामायण के रूप में रच कर श्री हनुमान जी का सान्निध्य प्राप्त किया। वाल्मीकि द्वारा रचित प्रभु श्रीराम की कथा का पढ़े लिखे अभिजात्य समाज में बड़ा आदर था। भवभूति ने भी श्री राम की कथा को उत्तर राम चरितम में लिखा। हरि अनंत हरि कथा अनंता। गोस्वामी तुलसीदास का लक्ष्य लोक जागरण था इसलिए राम कथा की जन व्याप्ति के लिए अवधी भाषा में उन्होंने श्री रामचरित मानस की रचना की।

लेखक विनय कांत मिश्र/
दैनिक बुद्ध का सन्देश

भारत और चीन को साथ लेकर नया गठबंधन क्यों बनाना चाहता है रूस?

उमेश चतुर्वेदी ।

सर्गेई लावरोव ने जब यह बात कही, उसके ठीक एक दिन पहले भारतीय विदेश मंत्री एस जयशंकर ने चीन और भारत के रिश्तों को लेकर जो कहा था, उस पर विवाद हो गया था। जयशंकर ने कहा था कि भारत के चीन से रिश्ते असामान्य हैं। यूक्रेन के साथ युद्ध में जूझ रहे रूस पर पूरी दुनिया का दबाव है कि वह यूक्रेन से लड़ाई बंद करे। लेकिन रूस चाहता है कि एशिया की तीन महाशक्तियों– चीन और भारत के साथ रूस की दोस्ती बने और दुनिया के सामने एक नया गठबंधन बनकर उभरे। हाल ही में खत्म हुए जी–20 देशों के विदेश मंत्रियों के सम्मेलन में रूस के इस रुख का खुलासा हुआ। इसी बैठक में भारत के पारंपरिक सहयोगी और मित्र देश रूस ने सुझाव दिया कि भारत और चीन के बीच दोस्ती बढ़नी चाहिए। दिल्ली में हुए जी–20 विदेश मंत्रियों के सम्मेलन और उसके बाद रायसीना डायलॉग में रूस के विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने ऐसा कह कर अमेरिका को चौंका दिया। सर्गेई लावरोव को जब सम्मेलन में बोलने का मौका मिला, तो उन्होंने कहा कि रूस चाहता है कि चीन और भारत दोस्त बनें। सर्गेई ने कहा कि रूस का दोनों देशों से बेहतर रिश्ता है। लेकिन अब रूस चाहता है कि एशिया के दोनों पड़ोसी देश मित्र बनें। सर्गेई लावरोव ने जब यह बात कही, उसके ठीक एक दिन पहले भारतीय विदेश मंत्री एस जयशंकर ने चीन और भारत के रिश्तों को लेकर जो कहा था, उस पर विवाद हो गया था। जयशंकर ने कहा था कि भारत के चीन से रिश्ते असामान्य हैं। जयशंकर ने यह बात चीन के विदेश मंत्री किन कांग के साथ हुई बैठक में कही थी। इस संदर्भ में रूसी विदेश मंत्री का सुझाव बेहद अहम हो जाता है। सर्गेई ने रायसीना डायलॉग में चीन–भारत और चीन–रूस संबंधों पर पूछे गए एक सवाल के जवाब में दोनों देशों को दोस्ती करने की सलाह दे डाली। सर्गेई ने कहा कि इस मित्रता में रूस की मौजूदगी भारत और चीन के लिए बेहतर हो सकती है। सर्गेई ने दोनों देशों के बीच दोस्ती को आगे बढ़ाने के लिए खुद का हाथ भी बढ़ाने का प्रस्ताव दिया। उन्होंने कहा कि रूस चीन और भारत को करीब लाने का हमेशा से पक्षधर रहा है। यह सच है कि यूक्रेन संकट के बाद भारत ने रूस से सबसे ज्यादा कच्चा तेल खरीदा है। इसे लेकर शुरू में अमेरिका ने नाक भौं सिकोड़ा था। लेकिन बाद में अमेरिका ने तर्क दिया कि भारत ने अपने ढंग से अपनी अर्थव्यवस्था को देखते हुए कदम उठाया है। याद कीजिए, साल 1999। तत्कालीन वाजपेयी सरकार ने जब परमाणु परीक्षण किया था, तब अमेरिका समेत उसकी अगुआई वाली पश्चिमी दुनिया ने भारत पर कई प्रतिबंध लगाये थे। लेकिन अब भारत दुनिया की पांचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था है और अब भारत को नकार पाना आसान नहीं है। इसीलिए भारत के रूस से सहयोगी संबंध को अमेरिका समेत दूसरे देश भी नकार नहीं पा रहे हैं। भारत ने इस दिशा में अपनी तरह से कोशिश भी की। उसने यूक्रेन पर रूस के रुख का समर्थन भी नहीं किया। चूंकि रूस भारत का पारंपरिक सहयोगी है, उसने अतीत में भारत को सैनिक साजोसामान से भी मदद की है। इस लिहाज से माना जा रहा था कि भारत कभी उसके खिलाफ कदम भी नहीं उठाएगा। लेकिन भारत ने इस मिथक को तोड़ा और रूस के रुख का समर्थन नहीं किया। अलबत्ता संयुक्त राष्ट्र संघ में जब भी रूस के खिलाफ अमेरिकी अगुआई में अभियान भी चला, उस वक्त भारत ने उस अभियान का भी समर्थन नहीं किया। युद्धग्रस्त रूस से कच्चे तेल की खरीददारी करके भारत भी एक तरह से रूस की मदद कर रहा है। वहीं भारत रणनीतिक तौर पर अपने लिए सस्ता तेल भी खरीदने में कामयाब रहा है। लेकिन अब रूस को लगने लगा है कि बदली हुई वैश्विक परिस्थिति में भारत और चीन को साथ आना चाहिए। वैसे अमेरिका जिस तरह चीन पर हमलावर है, वैसी स्थिति में चीन को भी ऐसा ही रुख अख्तियार करना पड़ सकता है। लेकिन भारत से रिश्ते सुधारने की दिशा में सबसे बड़ी बाधा उसका साम्राज्यवादी रुख है। सीमाओं पर अगर वह संयत और सौहार्द का रुख रखे तो हालात बदल सकते हैं। लेकिन चीन ऐसा नहीं करता। इसलिए सर्गेई को इस विषय में भी अपनी राय रखनी चाहिए। हालांकि उन्होंने ऐसा नहीं किया और सिर्फ दोस्ती की ही बात करके इतिश्री समझ ली। सर्गेई लावरोव ने रूस और यूक्रेन युद्ध पर भी अपने विचार रखे। इस संदर्भ में पश्चिमी देशों के रुख की आलोचना करते हुए सर्गेई ने कहा कि सब चाहते हैं कि रूस ही बातचीत की पहल करे। लेकिन कोई यूक्रेन के रुख पर ध्यान नहीं दे रहा है। उन्होंने यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की के उस आदेश का हवाला दिया, जिसमें कहा गया है कि यूक्रेन से बातचीत देशद्रोह होगा। रूस के इस रुख से साफ है कि वह अमेरिका की अगुआई वाले पश्चिमी देशों के सामने झुकने नहीं जा रहा है। सर्गेई ने यह भी कहा कि यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की से कोई नहीं पूछ रहा कि वे कब बातचीत करने जा रहे हैं। दरअसल पिछले साल जेलेंस्की ने एक दस्तावेज पर हस्ताक्षर किया था, जिसमें कहा गया है कि जब तक रूस में व्लादिमीर पुतिन राष्ट्रपति के पद पर रहेंगे, तब तक रूस से बातचीत अपराध होगा। इस सम्मेलन में उन्होंने पश्चिमी देशों की बजाय भारत पर ही भरोसा करने की बात कही। सर्गेई के बयान के बाद साफ है कि रूस एशिया की तीन बड़ी शक्तियों– भारत, चीन और खुद के साथ नयी साझेदारी विकसित करना चाहता है। इसमें वह पहल करने को भी तैयार है। इसका भविष्य क्या होगा, अभी कहना जल्दबाजी होगी। इसकी वजह है कि चीन का रुख अभी साफ नहीं है। वह भारत से अच्छे रिश्ते भी रखना चाहता है और सीमा पर तनाव की वजह भी बनता है।

यौन शिक्षा का तार्किक महत्त्व

यौन शिक्षा के अंतर्गत हिंसा संबंधी वैधानिक जानकारी तथा दंड व्यवस्था का ज्ञान विद्यार्थियों को होगा, तो वे कानूनी जाल में स्वयं को फंसाना नहीं चाहेंगे। साथ ही अपनी व अपने साथियों की वैधानिक रक्षा करने में प्रवृत्त होंगे। बढ़ रहे साइबर यौन अपराध जगत से मुक्ति महत्त्वपूर्ण, पर कठिन हो गई है। पोर्नसाइट फेसबुक पर यौन प्रस्ताव आदि की वास्तविकता को समझकर युवा अपना...

डा. वरिंदर भाटिया

यौन शिक्षा यानी सेक्स एजुकेशन, हमारी शिक्षा से जुड़ा ऐसी विषय वस्तु है जिस पर खुल कर बात करने और बहस करने से हमेशा बचा जाता है, लेकिन अब सभ्य समाज की सोच में फर्क आ रहा है। शिक्षा से जुड़े लोग देश में यौन अपराधों में वृद्धि के कारण इसकी आवश्यकता महसूस कर रहे हैं। यौन शिक्षा का मतलब इन बिंदुओं को पाठ्यक्रम में शामिल करना नहीं है, बल्कि इसके बारे में चेतना का विकास करना है। यूनेस्को की ताजा वैश्विक शिक्षा निगरानी रिपोर्ट के अनुसार, केवल 20 प्रतिशत देशों में यौन शिक्षा को लेकर कानून है, जबकि 39 प्रतिशत देशों में राष्ट्रीय नीति है। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि 68 प्रतिशत देशों में प्राथमिक स्कूलों में यौन शिक्षा अनिवार्य है जबकि 76 प्रतिशत देशों में माध्यमिक विद्यालयों में ऐसी व्यवस्था है। रिपोर्ट के अनुसार दस में से छह से अधिक देशों में लैंगिक भूमिका, यौन और घरेलू दुर्व्यवहार जैसे विषय पढ़ाए जाते हैं। दो में से एक देश आपसी सहमति की अवधारणा को मानता है। दो–तिहाई देशों में गर्भनिरोधक मुद्दों को स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। इस रिपोर्ट में कहा गया है, 'लैंगिकता मानव जीवन का एक अभिन्न हिस्सा है। हालांकि, यदि युवाओं को सही वैज्ञानिक ज्ञान प्रदान नहीं किया जाता है तो भ्रामक जानकारी के कारण उन्हें बचपन से वयस्कता में प्रवेश करने पर परेशानियां हो सकती हैं। यौन शिक्षा से हमारे समाज में गलत धारणाएं फैली हुई हैं। यह साधारण धारणा है कि यौन शिक्षा प्रजनन और यौन के आधारभूत तथ्यों के संबंध में युवकों और युवतियों को शिक्षित करने के लिए है। यौन शिक्षा का उद्देश्य इस क्षेत्र में व्याप्त गलत धारणाओं, वर्जनाओं और मिथकों को दूर करना एवं कामवासना के प्रति सकारात्मक मनोवृत्ति को बढ़ाना है।' यह कैसे किया जा सकता है, आइए इसको विचारें। सबसे पहले तो छोटे बच्चों की आरंभिक जिज्ञासाओं को यौन शिक्षा की आवश्यक शुरुआत के रूप में जाना जाना चाहिए। यह ध्यान रखना चाहिए कि परिवार में मां की गर्भावस्था, परिवार में एक नए बच्चे का जन्म और विपरीत लिंग के जननांगों संबंधी विषय में बच्चे की जिज्ञासाएं कामुकता की निशानी नहीं हैं। इसलिए बड़ों को बच्चों के इस तरह के सवालों का जवाब देते समय शर्म महसूस नहीं करनी चाहिए। बच्चों की इन जिज्ञासाओं को स्वाभाविक रूप से यथासंभव सही जानकारी को बिना किसी अनावश्यक विवरण के साथ सरल शब्दों में बताने का प्रयास करना चाहिए। इसके बाद ऐसी जानकारी चार्ट, फ्लेशकार्ड, फिलप चार्ट, फ्लेनलग्राफ और मॉडल के साधनों के आधार पर वार्त्ता, प्रश्नोत्तर सत्रों, फिल्मस्ट्रिप और फिल्मों द्वारा दी जा सकती है। किशोर लडके एवं लड़कियों के बीच विपरीत सेक्स के सदस्यों के प्रति सही अभिवृत्ति विकसित की जानी चाहिए। प्रतिजाति या विपरीत यौन के प्रति व्यवहार, यौन मानदण्डों और नैतिक नियमों पर व्यक्तिगत एवं सामूहिक विचार–विमर्श, प्रश्नोत्तर या फिल्म सहित विचार–विमर्श किया जाना यौन शिक्षा को प्रदान करने के लिए बाल्यावस्था को उपयुक्त माना गया है। बाल्यकाल के व्यवहारों का किशोरावस्था में व्यापक परिवर्तन देखने को मिलता है। इसलिए किशोरावस्था में होने वाले शारीरिक परिवर्तनों, उत्तेजना, भावात्मक अस्थिरता का सामना करने से पूर्व उसकी तैयारी के रूप में यौन शिक्षा के अंतर्गत उसे सही, स्पष्ट एवं वैज्ञानिक जानकारी देना आवश्यक है जिससे वह किशोरावस्था की चुनौतियों में स्व–नियंत्रण में रह सके। वास्तविकता में लडके एवं लड़कियों द्वारा यौन शिक्षा से संबंधित प्रश्नों का सही, संतुलित एवं वैज्ञानिक कसौटी पर उत्तर देना एक मुख्य चुनौती है। परिपक्व एवं अनुभवी व्यक्तियों ने यौन शिक्षा से संबंधित जानकारी को शीर्ष गोपनीयता के रूप में रखा और इसे नैतिकता से जोड़ दिया है। समाज में भी इस संबंध में इतने प्रतिबंध और निषेध स्थापित कर इसे अत्यंत गोपनीयता का विषय बना दिया है। भारत जैसे देशों में स्थिति और अधिक अपरिवर्तनवादी है जहां यौन से संबंधित विषयों को नैतिक भावना के उल्लंघन के रूप में लिया जाता है। ऐसे वातावरण में शिक्षकों और विशेषज्ञों द्वारा इस संदर्भ में जानकारी देना कठिन है। किन्तु जो कुछ भी कठिनाइयां हों, उनका समाधान अभिभावकों, शिक्षकों, विशेषज्ञों एवं नीति निर्माताओं को खोजकर बच्चों के हितों को ध्यान में रखना होगा। महिला के विरुद्ध यौन हिंसा रोकने में और बच्चों के विरुद्ध लैंगिक अपराधों को रोकने की दिशा में यौन शिक्षा की सार्थकता के लिए कई कारण हैं। यदि बालिकाएं तथा बालक यौन अपराध के शिकार अपनी मासूमियत के कारण होते हैं जो प्रायरू होता है तो यौन शिक्षा के विभिन्न पक्षों की जानकारी मिलने पर वे गुंडे, असामाजिक तत्त्वों, निकट संबंधियों, लंपट पड़ौसियों, भ्रष्ट सीनियर छात्रों के प्रलोभन व बहकावे में नहीं आएंगे। वे यौन मामलों में अधिक जागरूक व सतर्क हो जाएंगे। उन्हें अच्छे स्पर्श व बुरे स्पर्शों का अर्थ समझ में आने लगेगा। यौन शिक्षा के अंतर्गत किशोर–किशोरियों को यौन हिंसा से बचने के उपाय भी बताए जा सकते हैं। असामाजिक परिचित से चाकलेट, आइसक्रीम आदि के प्रलोभन, इंकार करना तथा सेल्फ डिफेंस (आत्मरक्षा) हेतु जूडो–कराटे सीखना, माशल आर्ट का अभ्यास करना, अपनी सुरक्षा के लिए 'आई फील एप' स्मार्ट फोन में इंस्टाल करना, जिसमें सेफ्टी के पावर बटन का उपयोग सीखना, 100 नंबर पर ऑटोमेटिक कॉल पुलिस का जाना, लोकेशन ज्ञात होना आदि उत्पीडन रोकने के आधुनिक प्रयास हैं।

डब्ल्यूपीएल 2023 में Mumbai Indians का जलवा जारी, जानें कौन सी टीम है शीर्ष पर, किसके पास हैं सबसे अधिक अंक

महिला प्रीमियर लीग सफलतापूर्वक आयोजित हो रही है। इस लीग में अब तक सबसे सफल टीम मुंबई इंडियंस के तौर पर पेश हुई है जिसने कोई मुकाबला नहीं गंवाया है। मुंबई ने अपनी जीत की हैट्रिक भी इसी के साथ पूरी कर ली है। मुंबई की टीम ने नौ मार्च को दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ खेले गए मुकाबले में धमाकेदार खेल दिखाते हुए टीम को मात दे दी है। इस मुकाबले में दिल्ली कैपिटल्स को आठ विकेट से हार का सामना करना पड़ा है।

मुंबई के खिलाफ मुकाबला हारने पर दिल्ली कैपिटल्स को भी लीग की पहली हार का सामना करना पड़ गया है। दिल्ली कैपिटल्स इससे पहले अपने दोनों मुकाबलों को जीत चुकी थी। इस मुकाबले से पहले तक दिल्ली कैपिटल्स भी दमदार खेल दिखाते हुए दोनों मुकाबलों में जीत हासिल करती आई थी। इस मुकाबले के बाद महिला प्रीमियर लीग की पॉइंट्स टेबल भी रोचक हो गई है।

मुंबई ने जीता तीसरा मुकाबला

बाएं हाथ की स्पिनर सैका इशाक ने अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखा जबकि हेली मैथ्यूज ने फिर से अपनी ऑलराउंड क्षमता दिखाई जिससे मुंबई इंडियंस ने गुरुवार को यहां दिल्ली कैपिटल्स को 30 गेंद शेष रहते हुए आठ विकेट से करारी शिकस्त देकर महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) टी20 क्रिकेट टूर्नामेंट में लगातार तीसरी जीत दर्ज की। मुंबई ने पहले दिल्ली को 18 ओवर में 105 रन पर ढेर किया और फिर 15 ओवर में दो विकेट पर 109 रन बनाकर आसान जीत दर्ज की।

ऐसा है पॉइंट्स टेबल का हालः बता दें कि महिला प्रीमियर लीग में अब तक कुल सात मुकाबले खेले जा चुके है। इस टूर्नामेंट में पॉइंट्स टेबल में काफी बदलाव देखने को मिले है। मुंबई इंडियंस की टीम अब तक टूर्नामेंट में कोई मुकाबला नहीं हारी है। टीम ने सभी मुकाबले जीतकर पॉइंट्स टेबल में शीर्ष स्थान हासिल किया है। मुंबई की टीम तीन मुकाबलों में जीत हासिल करने के बाद 6 अंकों के साथ शीर्ष पायदान पर है। वहीं दिल्ली कैपिटल्स की टीम दो मुकाबले जीतने और एक हारने के बाद चार अंकों के साथ दूसरे पायदान पर है। यूपी वॉरियर्स की टीम तीसरे स्थान पर है। यूपी की टीम अब तक एक मैच में जीत और एक में हार का सामना कर चुकी है। गुजरात की टीम दो अंकों के साथ चौथे स्थान पर और आरसीबी अब तक पॉइंट्स टेबल पर खाता नहीं खोल सकती है। आरसीबी शून्य अंकों के साथ पॉइंट्स टेबल में सबसे नीचे के पायदान पर है। बता दें कि टूर्नामेंट में सिर्फ वही टीमें आगे बढ़ेंगी जो शीर्ष तीन पायदान पर होंगी।

भारत और ऑस्ट्रेलियाके बीच हो रहे अंतिम मुकाबले में श्रेयरस अय्यर ने डाली ऐसी गेंद, कप्तान रोहित शर्मा का हंसते हुए हुआ ये हाल

भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी का चौथा और अंतिम मुकाबला खेला जा रहा है। इस टूर्नामेंट में ऑस्ट्रेलिया की टीम दमदार स्थिति में पहुंच गई है। मैच के दौरान का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है जिसमें कप्तान रोहित शर्मा श्रेयरस अय्यर की गेंदबाजी देखकर हंसते दिख रहे है। बता दें कि इस मुकाबले में ऑस्ट्रेलिया की टीम के स्थाई कप्तान स्टीव स्मिथ ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया है। पहले बल्लेबाजी करते हुए ऑस्ट्रेलिया की टीम 429 रन आठ विकेट के नुकसान पर बना चुकी है। दूसरे दिन अक्षर पटेल ने उस्मान ख्वाजा का बड़ा विकेट झटका है, जिसमें उन्होंने 180 रन बनाए है। उस्मान को एलबीडब्ल्यू आउट किया है। आठवां विकेट बनकर उस्मान पवेलियन लौटे है।

इस पिच पर भारतीय गेंदबाजों को विकेट हासिल करने के लिए काफी मशक्कत करनी पड़ी है। विकेट ना मिलने के दौरान मैदान पर कुछ ऐसा हुआ जिसे देखकर खुद कप्तान रोहित शर्मा की हंसी भी नहीं रूकी। ये घटना तब की है जब श्रेयस अय्यर को गेंदबाजी करने के लिए बॉल सौंपी गई। गेंदबाजी करते हुए श्रेयस अय्यर ने कुछ इस तरह से गेंद फेंकी की कप्तान रोहित शर्मा खुद ही हंसते हुए मैदान पर बैठ गए। दरअसल पहले दिन दो विकेट खोने के बाद रोहित शर्मा ने बल्लेबाज श्रेयस अय्यर को गेंद थमाई, जिसके बाद पहली गेंद स्टीव स्मिथ को फुल टॉस फेंकी। इस बॉल पर स्मिथ ने एक रन लिया। भारतीय कप्तान रोहित शर्मा भी इस गेंद पर हैरान रह गए क्योंकि इस गेंद पर छक्का पड़ना आसान था। छक्का ना पड़ने पर कप्तान रोहित शर्मा भी मैदान पर बैठकर हंसने लगे। जिसका वीडियो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है। मजबूत स्थिति में ऑस्ट्रेलियाः ऑस्ट्रेलिया की टीम ने दूसरे दिन खेल जारी रखते हुए आठ विकेट के नुकसान पर 456 रन बना लिए है। भारतीय टीम के लिए ऑस्ट्रेलिया ने बड़ा स्कोर खड़ा कर दिया है।

BNP Paribas Open: टॉमस मार्टिन एचवेरी को हराकर एंडी मरे के दूसरे दौर में

इंडयन वेल्स। तीन बार के ग्रैंडस्लैम विजेता एंडी मरे ने

गुरुवार को एक सेट से पिछड़ने के बाद वापसी करते हुए टॉमस मार्टिन एचवेरी को हराकर बीएनपी परिबास ओपन टेनिस टूर्नामेंट के दूसरे दौर में जगह बनाई। मरे ने तीन घंटे से अधिक चले पहले दौर के मुकाबले में एचवेरी को 6–7, 6–1, 6–4 से हराया। मरे ने मौजूदा सत्र में निर्णायक तीसरे या पांचवें सेट में पहुंचे किसी मुकाबले को नहीं गंवाया है। मरे ने 2023 में तीसरे सेट में पहुंचने पर बेस्ट ऑफ थ्री सेट के अपने पांचों जबकि पांचवें सेट में पहुंचने पर बेस्ट ऑफ फाइव सेट के दोनों मुकाबले जीते हैं। तीन ग्रैंडस्लैम खिताब जीतने वाले स्टेन वावरिंका ने भी कैलिफोर्निया में हार्ड कोर्ट प्रतियोगिता में वापसी करते हुए तीन सेट तक चले मुकाबले में क्वालीफायर एलेक्सांद्र वुकिच को 6–4, 1–6, 6–1 से हराया। वावरिंका अगले दौर में 26वें वरीय मियोमिर केसमानोविच से भिड़ेंगे। बेन शेल्टन ने फाबियो फोगनिनी को6–4, 6–1 से हराकर बाहर का रास्ता दिखाया। महिला वर्ग में 2021 की अमेरिकी ओपन चौंपियन ऐमा राडुकानु ने डेंका कोविनिच को 6–2, 6–3 से हराया जबकि 2022 ऑस्ट्रेलियाई ओपन उप विजेता डेनियली कोलिन्स को 80वें नंबर की डेलमा गाल्फी ने 6–4, 6–4 से शिकस्त दी।

डिजिटल इंडिया का भाग बन रही जनता, UPI से हर दिन का ट्रांजैक्शन 36 करोड़ से ज्यादा, RBI के गवर्नर शक्तिकांत दास का खुलासा

भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर शक्तिकांत दास ने घोषणा की कि यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस के माध्यम से किए गए भुगतान पिछले एक साल में तेजी से बढ़े हैं। न्च् के माध्यम से किए गए लेनदेन फरवरी 2023 में 36 करोड़ को पार कर गए। यह फरवरी 2022 में दर्ज 24 करोड़ से 50ः अधिक है। इन लेनदेन का मूल्य घ्6.27 लाख करोड़ है, जो फरवरी 2022 में दर्ज किए गए घ्5.36 लाख करोड़ से 17ः की वृद्धि है।

आरबीआई मुख्यालय में डिजिटल भुगतान जागरूकता सप्ताह के शुभारंभ पर बोलते हुए, दास ने कहा कि मासिक डिजिटल भुगतान लेनदेन पिछले तीन महीनों के दौरान प्रत्येक माह 1,000 करोड़ रुपये से अधिक हो गया है। उन्होंने कहा कि भारत की भुगतान प्रणाली विश्व स्तर पर जानी जाती है, और कई देशों ने सफलता की कहानी को दोहराने में रुचि दिखाई है।

दास ने यह भी खुलासा किया कि जनवरी 2023 में यूपीआई लेनदेन की संख्या 800 करोड़ से अधिक हो गई, और एनईएफटी (नेशनल इलेक्ट्रॉनिक फंड ट्रांसफर) ने 28 फरवरी को 3.18 करोड़ लेनदेन की अपनी उच्चतम दैनिक मात्रा का अनुभव किया। यूपीआई को 2016 में लॉन्च किया गया था और यह सबसे लोकप्रिय के रूप में उभरा है। भुगतान मोड, कुल डिजिटल भुगतान का 75ः हिस्सा है।

डिजिटल भुगतान अवसंरचना की स्वीकृति 17 करोड़ टच पॉइंट से बढ़कर 26 करोड़ टच पॉइंट हो गई है, जो 53ः की वृद्धि को दर्शाता है। दास ने देश में डिजिटल भुगतान को गहरा करने के लिए आरबीआई की प्रतिबद्धता को मजबूत करते हुए श्हर भुगतान डिजिटलश मिशन शुरू किया। भारत बिल भुगतान प्रणाली (बीबीपीएस) ने बिल भुगतान को नकदध्चेक से डिजिटल मोड में स्थानांतरित करना सुनिश्चित किया है, जबकि राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक टोल संग्रह (एनईटीसी) प्रणाली ने टोल भुगतान को डिजिटल मोड में स्थानांतरित करने में मदद की है, जिससे दक्षता में कमी आई है। टोल प्लाजा पर प्रतीक्षा समय। नेशनल ऑटोमेटेड क्लियरिंग हाउस (एनएसीएच) प्रणाली ने सिस्टम में लीकेज को खत्म करते हुए डिजिटल रूप से प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (डीबीटी) भुगतान की सुविधा प्रदान की है।

75 डिजिटल गांवों के कार्यक्रम के हिस्से के रूप में, दास ने घोषणा की कि आरबीआई ने 75 गांवों को गोद लेने का फैसला किया है, जिसमें ग्रामीण स्तर के उद्यमी शामिल हैं। इस कार्यक्रम के तहत पेमेंट सिस्टम ऑपरेटर्स (पीएसओ) 75 गांवों को गोद लेंगे और उन्हें डिजिटल भुगतान सक्षम गांवों में बदल देंगे। डिप्टी गवर्नर रबी शंकर, जो त्ठप् में भुगतान निपटान प्रणाली विभाग के प्रमुख हैं, ने इस कार्यक्रम को संबोधित किया और कहा कि पिछले पांच वर्षों में डिजिटल भुगतान सालाना 15ः बढ़ा है। शंकर ने अर्थव्यवस्था के वित्तीय औपचारिकरण की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा कि पैसा किसी भी अर्थव्यवस्था के मूल में होता है। उन्होंने कहा कि आरबीआई का डिजिटल विजन 2025 यह है कि विभाग के 20 साल पूरे होने तक हर जगह, हर जगह और हर बार डिजिटल भुगतान सुनिश्चित किया जाए।

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्नः

यूपीआई क्या है और यह कैसे काम करता है?

यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस (न्च्) एक रीयल–टाइम भुगतान प्रणाली है जो मोबाइल डिवाइस के माध्यम से बैंक खातों के बीच तुरंत धनराशि स्थानांतरित करके अंतर–बैंक लेनदेन को सक्षम बनाता है। यह बैंक खाते को सीधे मोबाइल नंबर से जोड़कर फंड ट्रांसफर की सुविधा देता है।

डिजिटल भुगतान के क्या लाभ हैं, और यह अर्थव्यवस्था को कैसे मदद करता है?

सुविधा, सुरक्षा और पारदर्शिता सहित डिजिटल भुगतान के कई लाभ हैं। डिजिटल भुगतान अर्थव्यवस्था को औपचारिक बनाने, रिसाव को कम करने और दक्षता बढ़ाने में मदद करता है।.

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर पाकिस्तान के औरत मार्च ने एक बार फिर से बटोरी सुर्खियां, जाने क्यों

मार्च को रोकने के लिए कई शहरों में अधिकारियों के प्रयासों के बावजूद हजारों महिलाएं पाकिस्तान की सड़कों पर नजर आईं।

औरत (महिला) मार्च के रूप में जानी जाने वाली, रैलियों में प्रतिभागियों द्वारा जो तलाक, यौन उत्पीड़न और मासिक धर्म जैसे विषयों से संबंधित लहराए गए बैनर और तख्तियों ने एक नए विवाद को भी जन्म दिया। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर लाहौर में 200 की भीड़ में शामिल एक स्कूली शिक्षक रबेल अख्तर की माने तो औरत मार्च का पूरा बिंदु सेफ्टी और सिक्योरिटी की मांग करना है जो इस देश और समाज में महिलाओं को नहीं मिल पाती है। अब हम चुप बैठने वाले नहीं हैं। यह हमारा दिन है, यह हमारा समय है।ष क्या है औरत मार्चः पाकिस्तान में एक महिला स्वयंसेवी संगठन हम औरतें ने 2018 में औरत मार्च की शुरुआत की थी। ये संगठन हर साल महिला दिवस के मौके पर आठ मार्च को औरत मार्च का आयोजन करता है। इसमें महिलाओं को हर क्षेत्र में आजादी देने और आगे बढ़ाने की बात कही जाती है। पुलिस संग क्यों हुई भिडंत : सोशल मीडिया पर पोस्ट किए गए वीडियो में कई पुलिस अधिकारियों को प्रदर्शनकारियों पर लाठीचार्ज करते हुए दिखाया गया है क्योंकि उन्होंने प्रदर्शन में शामिल होने की कोशिश की थी। गृह मंत्री राणा सनाउल्लाह ने एक ट्वीट में कहा कि राजधानी के पुलिस प्रमुख को तलब किया गया है और इसमें शामिल अधिकारियों को निलंबित कर दिया गया है। शहर के अधिकारियों ने सप्ताहांत में सुरक्षा प्रदान करने से इनकार कर दिया था, इससे पहले कि एक अदालत ने उन्हें वापस जाने का आदेश दिया, षविनम्रष प्रतिवाद को आगे बढ़ने की अनुमति दी। ग्राफिक डिजाइनर सोहेला अफजल ने सवाल उठाते हुए पूछा कि यह हास्यास्पद है कि हमें हर साल एक ही नाटक से कैसे गुजरना पड़ता है... वे अपने अधिकारों की मांग करने वाली महिलाओं से इतना डरते क्यों हैं? कराची में, न्यायाधीशों ने सप्ताहांत के लिए निर्धारित संबंधित रैली पर प्रतिबंध लगाने के लिए एक व्यक्ति द्वारा कानूनी चुनौती को खारिज कर दिया ताकि कामकाजी महिलाएं भाग ले सकें। राजधानी इस्लामाबाद में, आयोजकों ने सभा को शहर के एक पार्क तक सीमित रखने के आदेशों का पालन करने से इनकार कर दिया, जहां फरवरी में एक महिला के साथ सामूहिक बलात्कार किया गया था।

Germany के 'यहोवा विटनेस किंगडम हॉल' में गोलीबारी, 8 लोगों की मौत

बर्लिन। उत्तरी जर्मनी के हैम्बर्ग शहर में बृहस्पतिवार शाम

'यहोवा विटनेस किंगडम हॉल' में हुई गोलीबारी में आठ लोगों की मौत हो गई और कई अन्य लोग घायल हुए हैं। पुलिस ने यह जानकारी दी। 'यहोवा विटनेस किंगडम हॉल' एक तीन मंजिला इमारत में स्थित है। हल्की बर्फबारी के बीच शुक्रवार को सुबह कई जांचकर्ताओं को इमारत के बाहर देखा गया। आठ लोगों के मारे जाने की जानकारी पुलिस की वेबसाइट में दी गई है और हमले के कारण के बारे में कुछ नहीं बताया गया है। इससे पहले पुलिस के प्रवक्ता होल्गर वेरेन ने जर्मनी के दूसरे सबसे बड़े शहरग्रॉस बोरस्टेल में गोलीबारी की घटना के बारे में बताया था, ''हमें अभी तक केवल यह पता चला है कि कई लोगों की जान गई है और कई घायल हुए हैं, जिन्हें अस्पताल ले जाया गया है।'' उन्होंने कहा था कि उन्हें घायलों की हालत के बारे में अभी कोई जानकारी नहीं है। हैम्बर्ग पुलिस ने शुक्रवार को सुबह ट्वीट किया कि उनका मानना है कि गोलीबारी में एक ही हमलावर शामिल था और इसलिए धीरे–धीरे इलाके से बल को वापस बुलाया जा रहा है। पुलिस ने कहा, ''हमले के मकसद को पता लगाने के लिए जांच जारी है।'' हैम्बर्ग पुलिस के अधिकारियों ने बताया कि शुक्रवार को दोपहर में एक संवाददाता सम्मेलन बुलाकर घटना से जुड़ी जानकारी साझा की जा सकती है। वेरेन ने बताया कि पुलिस को स्थानीय समयानुसार रात करीब सवा नौ बजे गोलीबारी की सूचना मिली और वह तुरंत मौके पर पहुंची। पुलिस ने देखा कि भूतल पर कई लोग थे, जिन्हें गोलियां लगी थीं। पुलिस कर्मियों ने ऊपर की मंजिल से गोली की आवाज सुनी, जहां उन्हें एक व्यक्ति मृत मिला, जिसे गोली लगी थी। ऐसा माना जा रहा है कि वह हमलावर हो सकता है। उन्होंने बताया कि पुलिस ने अपनी ओर से कोई गोलीबारी नहीं की। पुलिस अधिकारियों ने शुक्रवार को तड़के बताया कि वे अब भी यह पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि मामले में कोई और भी तो शामिल नहीं था। 'यहोवा विटनेस' एक अंतरराष्ट्रीय गिरजाघर का हिस्सा है। अमेरिका में 19वीं शताब्दी में इसकी स्थापना की गई थी। इसका मुख्यालय न्यूयॉर्क के वार्विक में है। यह दुनियाभर में अपने 87 लाख अनुयायी होने का दावा करता है, जिनमें से करीब 1,70,000 जर्मनी में हैं।

Cryptocurrency चुराकर परमाणु बम बना रहा किम जोंग उन, दुनिया का ध्यान भटकाने के लिए बनाया बैलिस्टिक मिसाइल वाला प्लान

पाकिस्तान के उकसावे पर मोदी सरकार के हमले हो या चीन के साथ सीमा पर संघर्ष में इजाफे की बात। अमेरिकी रिपोर्ट ने भारत को लेकर चीन और पाकिस्तान संग संबंधों पर अपनी रिपोर्ट में कई बड़े दावे किए हैं। लेकिन अब अमेरिका ने सनकी तानाशाह किम जोंग उन को लेकर बड़े खुलासे किए हैं। उत्तर कोरिया को लेकर अमेरिका ने एक बार फिर से चौंकाने वाला खुलासा किया है। 8 मार्च को जारी अमेरिकी खुफिया रिपोर्ट में ये दावा किया गया है कि उत्तर कोरिया का तानाशाह किम जोंग उन अपने न्यूक्लियर प्रोग्राम के तहत एक बार फिर परमाणु परीक्षण करने जा रहा है। हाल ही में जारी सालाना थ्रेट असीसमेंट रिपोर्ट में ये भी दावा किया गया है कि नॉर्थ कोरिया परमाणु परीक्षण को छिपाने के

लिए बैलेस्टिक मिसाइले दागना जारी रख सकता है। बैलिस्टिक मिसाइल दागने का दावा : दक्षिण कोरिया की सेना ने दावा किया कि उत्तर कोरिया ने 9 मार्च को अपने पश्चिमी तट से समुद्र की ओर छोटी दूरी की एक बैलिस्टिक मिसाइल दागी है। दक्षिण कोरिया के 'ज्वाइंट चीफ ऑफ स्टॉफ' ने कहा कि मिसाइल को पश्चिमी तटीय शहर नम्पो के आसपास के इलाके से दागा गया। हालांकि दक्षिण कोरिया की सेना ने अभी यह नहीं बताया है कि मिसाइल कितनी दूरी तक गई। उत्तर कोरिया के नेता किम जोंग उन की बहन किम यो जोंग ने मंगलवार को चेतावनी दी थी कि उनका देश अमेरिका और दक्षिण कोरिया के खिलाफ ''शीघ्र एवं अत्यंत उग्र कदम'' उठाने के लिए तैयार है। क्रिप्टो करेंसी की चोरी : गौरतलब है कि 2006 के बाद नॉर्थ कोरिया ने छह बार परमाणु परीक्षण किया है। हर परीक्षण के बाद उसकी न्यूक्लियर ताकत में इजाफा होता जा रहा है। आपको बता दें कि किम जोंग उन ने आखिरी परमाणु परीक्षण 2017 में किया था। उसके बाद कई खबरों में आया कि नॉर्थ कोरिया ने एक बार फिर परमाणु परीक्षण कर डाला। हालांकि इसके कोई पुख्ता सबूत नहीं मिले। अमेरिकी रिपोर्ट में दावा किया गया है कि नॉर्थ कोरिया अपने घोषित सैन्य लक्ष्यों को आगे बढ़ाने के लिए न्यूक्लियर डिवाइस का टेस्ट करने जा रहा है। इसके साथ ही अमेरिकी रिपोर्ट में कहा गया है कि नॉर्थ कोरिया अपने परमाणु कार्यक्रमों के लिए क्रिप्टो करेंसी की चोरी करता है।

पीएम मोदी के बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ ने लैंगिक समानता में निभाई महत्वपूर्ण भूमिका, यूएन में बोलीं भारत की स्थायी प्रतिनिधि

संयुक्त राष्ट्र में भारत की स्थायी प्रतिनिधि रुचिरा कम्बोज ने कहा कि पीएम मोदी के नेतृत्व ने श्बेटी बचाओश, श्बेटी पढ़ाओश जैसे प्रभावशाली अभियानों के माध्यम से लैंगिक समानता, महिला सशक्तिकरण के महत्व को उजागर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। संयुक्त राष्ट्र के स्थायी प्रतिनिधि ने श्67 साइड इवेंट ष्ए वर्ल्ड वी वीमेन एंड ए वर्ल्डष् में कहा, ष्भारत के प्राचीन सभ्यतागत मूल्यों और सांस्कृतिक लोकाचार ने हमें लैंगिक समानता और महिलाओं के सशक्तिकरण को हमारे समाज के प्रमुख किरदारों में से एक के रूप में पहचानना करवाया है। उन्होंने कहा कि हम अपने प्रधानमंत्री के नेतृत्व द्वारा भी निर्देशित होते हैं, जो श्बेटी बचाओश, श्बेटी पढ़ाओश जैसे प्रभावशाली अभियानों के माध्यम से जारी किए गए इनके महत्व को उजागर करने में सहायक रहे हैं। कम्बोज ने इस कार्यक्रम में कहा, श्डिजिटल इंडियाश, श्माईगॉवश प्लेटफॉर्म जैसे कार्यक्रम पिछले नौ वर्षों में भारत में डिजिटल रूप से सशक्त समाज और ज्ञान अर्थव्यवस्था बनाने में अभूतपूर्व सफलता की कहानी बन गए हैं। उन्होंने कहा कि भारत सरकार ने महिलाओं के लिए वित्त, ऋण, प्रौद्योगिकी और रोजगार तक पहुंच को सक्षम करने के लिए अधिक ध्यान देने के साथ कई नागरिक–केंद्रित डिजिटल पहल भी की हैं। उन्होंने कहा कि इन पहलों ने संकट में फंसी महिलाओं को बड़ी सहायता प्रदान करने, महिलाओं के खिलाफ हिंसा को रोकने और समाज के हर क्षेत्र में महिलाओं की समान भागीदारी को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित किया है। एक उदाहरण देते हुए, कंबोज ने कहा कि भारत सरकार ने बैंक खाते खोले हैं। 482 मिलियन से अधिक लोगों के बैंक खाते हैं, जिनमें से 55 प्रतिशत से अधिक खाताधारक महिलाएं हैं। कोविड महामारी के दौरान, इस पहल ने सीधे लाभ हस्तांतरण में मदद की लगभग 200 मिलियन महिलाएं।

सिरवत रामजानकी मंदिर पर विष्णु महायज्ञ का आयोजन

कलश भरकर विधि विधान से कलश पूजन कर विष्णु महायज्ञ का आरम्भ

सिद्धार्थनगर। शुक्रवार को से सिरवत रामजानकी मंदिर पर विष्णु

महायज्ञ का आयोजन किया जा रहा है जिसके लिए शुक्रवार को ग्राम तथा क्षेत्र वासियो ने भव्य कलश यात्रा निकाली जो सिरवत राम जानकी मंदिर से सेमरा बाबा पलटन नाथ शिव मंदिर तक निकाली गई कलश भरकर विधि विधान से कलश पूजन कराया गया कथावाचक अयोध्या के श्री ब्रम्हानंद शास्त्री जी महराज के द्वारा नौ दिन तक भागवत महा कथा सुनाया जाएगा इस कलश यात्रा में यज्ञ के आयोजक प्रशुन्न शुक्ला शशि कुमार शुक्ला जी तथा मुख्य जजमान गुप्तेश्वर चौबे के साथ मंडल अध्यक्ष रमेश मणि त्रिपाठी, सत्यप्रकाश राही,राघवेंद्र मिश्रा , संजय दुबे, अमरनाथ तिवारी, राधे बाबा, परशुराम शुक्ला, जितेंद्र चौधरी ग्रामप्रधान, श्याम नारायण चौबे, फरसा बाबा,अवधेश चौबे, संचालक आनंद त्रिपाठी, दिनेश शुक्ला, ओमप्रकाश शुक्ल, पुनीत दुबे आदि लोग मौजुद रहें।

दीर्घायु चिकित्सालय में प्राकृतिक चिकित्सा दिवस पर निशुल्क परामर्श शिविर 12 मार्च को

गोरखपुर। मुख्यमंत्री के गृह नगर गोरखपुर में बनारस रोड नौसढ स्थित दीर्घायु चिकित्सालय में प्राकृतिक चिकित्सा दिवस के उपलक्ष्य में नेचुरोपैथी आरोग्य एवं परामर्श शिविर का आयोजन 12 मार्च दिन रविवार को डॉ प्रमोद कुमार मद्धेशिया के नेतृत्व में लगाया जाएगा। डॉ प्रमोद कुमार मद्धेशिया ने बताया कि हर घर आरोग्य घर–घर नेचुरोपैथी, इंटरनेशनल नेचुरोपैथी आर्गेनाइजेशन एवं नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ नेचुरोपैथी आयुष मंत्रालय भारत सरकार द्वारा प्राकृतिक चिकित्सा दिवस के उपलक्ष्य में नेचुरोपैथी एक समग्र आर्युविज्ञान के तहत नेचुरोपैथी आरोग्य एवं परामर्श शिविर दीर्घायु चिकित्सालय, बनारस रोड नौसढ़ में 12 मार्च को लगाया जाएगा। उपरोक्त शिविर में निशुल्क बुखार एवं चेचक की दवाएं व शुगर ब्लड प्रेशर का जांच किया जाएगा। साथ ही आयुष मंत्रालय भारत सरकार की मुहिम हर घर आरोग्य घर घर नेचुरोपैथी विषय पर लोगों को आयुर्वेद के बारे में जागरूक किया जाएगा।

गाँव की समस्याओं का होगा गाँव मे समाधानः राम सिंह

शोहरतगढ़ ब्लॉक के नीवी गाँव में आयोजित चौपाल कार्यक्रम में पेंशन समेत विभिन्न योजनाओं पर दिया गया जोर

दैनिक बुद्ध का सन्देश

शोहरतगढ़,सिद्धार्थनगर। चौपाल कार्यक्रम में राशनकार्ड, वृद्धावस्था, विधवा पेंशन व दिव्यांग

शोहरतगढ़ ब्लाक के ग्राम पंचायत नीबी में गाँव की समस्या गाँव में समाधान करने हेतु पहली पाली में ग्राम चौपाल कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता एडीओ (आईएसबी) राम सिंह ने की। पेंशन, अन्त्योदय राशनकार्ड धारकों के आयुष्मान कार्ड समेत ग्राम विद्युतिकरण, पीएम आवास योजना, मनरेगा योजना, किसान सम्मान निधि, व्यक्तिगत शौचालय आदि योजनाओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। इसके साथ ही कार्यक्रम में शासन द्वारा चलायी जा रही गरीब कल्याण व अन्य लाभकारी योजनाओं के बारें में जानकारी देते हुए कहा कि खुले में शौच की बजाए शौचालय का प्रयोग करें। खुले में शौच करने से गांव में गंदगी फैलती है जिससे विभिन्न प्रकार की बीमारियां जन्म लेती है। गांव को साफ सुथरा रखें। इस दौरान चौपाल कार्यक्रम में कुल 17 मामले आये, जिनमे मौके पर 6 मामलों का निस्तारण कर दिया गया। कार्यक्रम को ग्राम प्रधान शीला चौरसिया, तकनीकी सहायक पीयूष मिश्रा, तकनीकी सहायक अजय पाण्डेय, ग्राम विकास अधिकारी अजय भारती, पूर्ति निरीक्षक रामसेवक यादव, समाज कल्याण विभाग के प्रमोद कुमार, प्रधान प्रतिनिधि राजनेत चौरसिया उर्फ छोटू चौरसिया ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। इस दौरान प्रमुख रूप से पंचायत सहायक माया देवी, रोजगार सेवक सुभाष चौरसिया, प्रधानाचार्य हाजरा खातून, सप्लाई इंस्पेक्टर रामसेवक यादव, लेखपाल बबिता सिंह समेत गाँव के राधेश्याम, अर्जुन प्रसाद, जंग बहादुर, रामसेवक, राजबहादुर, रामप्रीत, गुड़िया, शकीना, चांदनी, उर्मिला आदि मौजूद रहे।

चौपाल कार्यक्रम में अधिकारियों ने सुनी ग्रामीणों की समस्याएं

- शोहरतगढ़ के डोहरिया खुर्द में गाँव की समस्या को गाँव में समाधान करने हेतु लगाया गया था चौपाल कार्यक्रम
- एडीओ (आईएसबी) राम सिंह ने की चौपाल कार्यक्रम की अध्यक्षता चौपाल कार्यक्रम में आये 7 मामलों में मौके पर हुआ 5 मामलों का निस्तारण

दैनिक बुद्ध का सन्देश

शोहरतगढ़,सिद्धार्थनगर। शोहरतगढ़ ब्लाक अन्तर्गत न्याय पंचायत डोहरिया बुजुर्ग के ग्राम पंचायत डोहरिया खुर्द में गाँव की समस्या गाँव में समाधान करने हेतु ग्राम चौपाल कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे एडीओ (आईएसबी)

राम सिंह ने चौपाल में ग्रामीण विद्युतिकरण, प्राथमिक विद्यालय के विद्युत कनेक्सन, राशनकार्ड, वृद्धावस्था, विधवा पेंशन व दिव्यांग पेंशन, अन्त्योदय राशनकार्ड धारकों के आयुष्मान कार्ड, प्रधानमंत्री आवास योजना, मनरेगा योजना, ग्राम पंचायत में जमाव, बाल विकास पुष्टाहार, आंगनबाड़ी, किसान सम्मान निधि, व्यक्तिगत शौचालय आदि योजनाओं को विस्तार से रखा। पात्र बुजुर्ग महिलाओं के वृद्धावस्था पेंशन आदि पर जोर दिया गया। इसके साथ ही शासन द्वारा चलायी जा रही गरीब कल्याण व अन्य लाभकारी योजनाओं के बारें में जानकारी देते हुए कहा कि खुले में शौच की बजाए शौचालय का प्रयोग करें। खुले में शौच करने से गांव में गंदगी फैलती है जिससे विभिन्न प्रकार की बीमारियां जन्म लेती है। गांव को साफ सुथरा रखें। इस दौरान चौपाल कार्यक्रम में 7 मामले आये, जिनमे मौके पर 5 मामलों का निस्तारण कर दिया गया। कार्यक्रम को तकनीकी सहायक पीयूष मिश्रा, तकनीकी सहायक अजय पाण्डेय, ग्राम विकास अधिकारी सन्त अखिलेश्वर, पूर्ति निरीक्षक रामसेवक यादव, प्रधान प्रतिनिधि महेन्द्र प्रताप चौधरी, समाज कल्याण विभाग के प्रमोद कुमार ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। इस दौरान प्रमुख रूप से सहायक सचिव मनीषा, रोजगार सेवक रामपाल चौधरी, लेखपाल पिन्टू पासवान, स्वास्थ्य विभाग की ए०एन०एम० नीलम, मानती सेवी, सुमन चौधरी, सहायिका श्याममती, उषा देवी कोटेदार गीता देवी सहित प्रधान प्रतिनिधि पिन्टू चौधरी, धीरेंद्र चौधरी, बालमुकुंद चौधरी, रामभजन चौधरी, दीनू चौधरी, वीरेंद्र पासवान, मोहम्मद हनीफ सहित सैकड़ों लोग मौजूद रहे।

रोटरी क्लब बस्ती ग्रेटर ने सरोज चौधरी को किया सम्मानित

जीवन के सभी क्षेत्रों में आगे बढ रही हैं महिलायें: डा. वी.के. वर्मा

दैनिक बुद्ध का संदेश

बस्ती। शुक्रवार को रोटरी क्लब बस्ती ग्रेटर द्वारा अध्यक्ष डा. वी.के. वर्मा के संयोजन में अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य पर भारतीय जीवन बीमा निगम बस्ती में सहायक प्रशासनिक अधिकारी सरोज चौधरी को उनके कार्यालय में बुके, स्मृति चिन्ह, प्रशस्त्रि पत्र देकर सम्मानित किया गया। डा. वी.के. वर्मा ने कहा कि महिलाएं पुरूषों के बराबर ही नहीं बल्कि उनसे कहीं आगे हैं। यदि एक बालिका पढ़ लिख लेती है तो वह अपने परिवार का ही नहीं संपूर्ण

समाज का भला करती है। आज हमारे सामने बहुत सारी चुनौतियां हैं जिसमें सबसे बड़ी लिंगानुपात है। इसे बराबर करने में प्रत्येक महिला एवं पुरूष की बराबर भागीदारी है। महिलाओं के प्रति समाज में अच्छी सोच बनाने के लिए आवश्यक है कि महिलाओं की सफलता की कहानियों को जन–जन तक पहुंचाया जाए। हमारे देश में आदिकाल से ही नारी शक्ति को पूजनीय माना गया है। रोटरी ग्रेटर का उद्देश्य ऐसी महिलाओं का सम्मान करना है जो कठिन परिस्थितियों में भी हिम्मत नहीं हारी और निरन्तर आगे बढ रही है। सरोज चौधरी को सम्मानित किये जाने के दौरान रोटरी क्लब बस्ती ग्रेटर के चार्टर अध्यक्ष किशन गोयल, प्रतिभा गोयल, राजेश्वरी वर्मा, डा. आलोक रंजन, डा. शिव प्रकाश भारती, डा. श्याम नरायन चौधरी, अनमोल मोदी, अभिषेक त्रिपाठी, अशोक कुमार शुक्ल, विनय मौर्य, डा. अफजल हुसेन अफजल, आदि शामिल रहे।

सूचना

न्यायालय जिला उपभोक्ता विवाद प्रतितोष आयोग–सिद्धार्थनगर।

(स्थित विकास भवन, सिद्धार्थनगर)

विपक्षी के नाम समन

धारा 38 (2क) उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम–2019

परिवाद संख्या– 80/2021

शिव सागर गुप्ता उम्र करीब 30 वर्ष पुत्र श्याम सुन्दर गुप्ता निवासी ग्राम–लखनपारा, पो०– उदयराजगंज, तप्पा–सिरवत परगना–नौगढ़ तहसील–शोहरतगढ़, जनपद–सिद्धार्थनगर।

1–**शाखा प्रबन्धक** H.D.F.C Ergo General Insurance Company Limted ,Ratan Square ,20A, Vidhan Sabha Marg, Lucknow- 226001.

2–M.D/Cheir parson, H.D.F.C Ergo General Insurance Company Limted, 1st floor H.D.F.C House Back bay Redamation, H.T Parrekh Marg, Charch gate Mumbai- 400020, India.

चूंकि आपके विरुद्ध श्री शिव सागर गुप्ता पुत्र श्याम सुन्दर गुप्ता परिवादी ने एक शिकायती प्रार्थना–पत्र जिसकी प्रतिलिपि संलग्न है,जिला उपभोक्ता विवाद प्रतितोष आयोग, सिद्धार्थनगर के समक्ष प्रस्तुत किया है।

अतः आपको आदेश दिया जाता है कि आप इस शिकायती प्रार्थना–पत्र के सम्बन्ध में जो कुछ कहना चाहते हैं उसे जिला उपभोक्ता विवाद प्रतितोष आयोग, सिद्धार्थनगर के समक्ष दिनांक 17.04.2023 को पूर्वान्ह 10.00 बजे उक्त न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित उत्तर/प्रतिवाद पत्र प्रस्तुत करें अन्यथा आपकी अनुपस्थिति में परिवाद एकपक्षीय निर्णित किया जायेगा। मेरे समक्ष एवं आयोग की मुद्रा सहित आज दिनांक 01.03.2023 को जारी किया गया। संलग्नक :– परिवाद पत्र की छायाप्रति।

अध्यक्ष,

जिला उपभोक्ता विवाद प्रतितोष आयोग , सिद्धार्थनगर।

उसका में हुआ होली मिलन एवं प्रतिभा सम्मान समारोह संपन्न

दैनिक बुद्ध का सन्देश

उसका बाजार,सिद्धार्थनगर। कस्बा के रेहरा बाजार

स्थित गांधी चबूतरा मैदान में गुरुवार को उवप्रव उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल के स्थानीय नगर इकाई के तत्वधान में रंगारंग कार्यक्रमो के बीच होली मिलन एवं प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उदघाटन नगर इकाई के संरक्षक संदीप खेतान के कर कमलों फीता काटकर किया गया। तत्पश्चात व्यापार मण्डल के नगर अध्यक्ष दिनेश मोदनवाल और प्रभारी अधिशाषी अधिकारी विंध्याचल द्वारा माँ सरस्वती के चित्र पर क्रमशः पुष्प माल्यार्पण और दीप प्रज्ज्वलन से रंगारंग कार्यक्रम की विधिवत शुरुआत हुई। माँ सरस्वती और गणेश वंदना से कार्यक्रम की शुरुआत होने के बाद बारी बारी स्थानीय कलाकारों यथा गायकों, वादकों, मिमिक्री एवं डांसरों ने अपनी अपनी प्रतिभाओं का मंच पर शानदार प्रदर्शन कर लोगो का मन मोहा। इस कड़ी में रंगारंग कार्यक्रम की शुरुआत जबाबी बिरहा से हुआ। जिसमें बनारस से आयी बिरहा गायिका कविता यादव और रामा यादव ने काफी देर तक अपनी जबाबी बिरहा के माध्यम से दर्शकों और स्रोताओं को ध्यान खींचे रखा। इसके बाद सागर मयूर आर्ट्स की तरफ से राधा–कृष्ण के ब्रज की होली का अभिनय और होली गीत गाकर दर्शकों को काफी देर तक आकर्षित किया। इसके बाद क्षेत्रीय कलाकारों में अंजली शुक्ल ने कई भजन और होली गीत गाकर अपनी कर्णप्रिय आवाज का जादू बिखेरा और मीठी आवाज से स्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया। कार्यक्रम की इसी कड़ी में कस्बा निवासी बैजनाथ ने भक्ति गीत, होली गीत के जरिये लोगों के बीच समां बाँधा तो मिमिक्री कलाकार शिवम् गुप्ता ने कई सिनेमा कलाकारों की आवाज निकाल लोगो को हँसने पर विवश कर दिया।क्षेत्रीय कलाकारों ने अपने अपने कला क्षेत्रों में बेहतरीन प्रदर्शन कर दर्शकों और स्रोताओं से भरे खचाखच पंडाल में कार्यक्रम के अंत तक बाँधे रखा। दोपहर बाद से देर रात्रि लगभग 12 बृजे तक चले इस भव्य कार्यक्रम के दौरान कलाकारों और दर्शकोंश्रोताओं के बीच जमकर अबीर गुलाल और रंगों की बौछार हुई। मंच से लेकर पाण्डाल तक हर सख्स रंगों से सारोबोर दिखा।इस होली मिलन एवं प्रतिभा सम्मान समारोह के दौरान क्षेत्र के प्रतिभावान काव्य रचना, लेखन, गायन व नृत्य आदि क्षेत्र के कलाकारों और समाज में उत्कृष्ट कार्य करने वाले समाजसेवियों को अंगवस्त्र व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस मंच पर सम्मान पाने वाले समाजसेवी श्रीधर पाण्डेय ने कार्यक्रम आयोजक मण्डल की सराहना करते हुए कहा कि उसका जैसे छोटे और ग्रामीण क्षेत्र में प्रतिभाओं की कमी नहीं है। बशर्ते उनकी पहचान कर समय समय पर ऐसे कार्यक्रमोध्आयोजनों पर मंच देकर उत्साहवर्द्धन करने की जरूरत है। उन्होंने होली मिलन व प्रतिभा सम्मान समारोह को आयोजित करने वाले उवप्रव उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मण्डल के स्थानीय इकाई की सोंच और उसके कार्यक्रम को मूर्तरूप देने तक में विशेष सहभागी समाजसेवी फूलचन्द सहानी के जीवट भरे प्रयास की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे कार्यक्रमो से न समाज में सिर्फ आपसी सदभाव,भाई चारा और सौहाद्र की भावना बलवती होती है बल्कि लोकल की प्रतिभाओं को भी अपने हुनर को निखारने और साबित करने का बेहतर मंच मिलता है। समारोह के क्रम में नगर के प्रतिष्ठित व्यवसायी अनूप छापड़िया एवं निर्मल छापड़िया व व्यापार व आयोजन समिति द्वारा पत्रकार रूपेश सिंह, धर्मेन्द्र पाण्डेय, मनीष जायसवाल, अनन्त मिश्र, अश्वनी मिश्र, पिन्टू दुबे, पवन जायसवाल, सागर मयूर आर्ट्स से कलाकारों, बाबू आर्ट से शिवम गुप्ता, रामा यादव, कविता यादव आदि दर्जन भर लोगों को अंगवस्त्र तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन रूद्र उत्कर्ष शुक्ल ने किया। इस मौके पर सुरेश यादव, अयोध्या साहू, यद्योग व्यापार मंडल के जिलाध्यक्ष अनिल सिंह, नगर अध्यक्ष दिनेश मोदनवाल, उपाध्यक्ष धर्मेन्द्र चौरासिया, संरक्षक संदीप खेतान, वरिष्ठ महामंत्री विभूति अग्रहरि, मंत्री अनूप मोदनवाल, संरक्षक देवेंद्र अग्रगरि, उपाध्यक्ष गयादीन साहू, उपाध्यक्ष दिनेश पटवा, संरक्षक गोपाल अग्रहरि, अग्रहरि, दयाराम लोधी, रविन्द्र कुमार अग्रहरि, संदीप खेतान, अनिल मोदनवाल, अयोध्या साहू, दिलीप अग्रहरि, शम्भू प्रसाद अग्रहरि, सुमन्त आर्य, लक्ष्मी सहानी, रविकांत अग्रहरि, रियाज अहमद, विजय अग्रहरि, आदि उपस्थित रहे।

हत्या के दोषी पुष्पेंद्र उर्फ बंटी दुबे को उम्रकैद

नौ वर्ष पूर्व रामनारायण यादव की गोली मारकर हत्या करने का है आरोप

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सोनभद्र। नौ वर्ष पूर्व रामनारायण यादव की गोली मारकर हत्या करने के मामले में शुक्रवार को सुनवाई करते हुए अपर सत्र न्यायाधीश प्रथम खलीकुज्जमा की अदालत ने दोषसिद्ध पाकर दोषी पुष्पेंद्र उर्फ बंटी दुबे को उम्रकैद व 10 हजार रूपये अर्थदंड की सजा सुनाई। अर्थदंड न देने पर 6 माह की अतिरिक्त कैद भुगतनी होगी। वहीं पांच अन्य आरोपियों को साक्ष्य के अभाव में दोषमुक्त करार दिया। अभियोजन पक्ष के मुताबिक ओबरा थाना क्षेत्र के बिल्ली मारकुंडी निवासी अनामिका यादव पुत्री रामनारायण यादव ने ओबरा थाने में दी तहरीर में अवगत कराया था कि 21 फरवरी 2014 को घर पर उसके अलावा उसके पिता, मां और दो नौकर मौजूद थे। सुबह करीब आठ बजे दो लोग घर पर आए और घंटी बजाने लगे। जब नौकर ने दरवाजा खोला तो दोनों गिट्टी लेने की बात करते हुए घर में घुस गए और एक युवक ने उसके पिताजी को गोली मार दिया और दोनों घर से बाहर निकले और बाइक से भाग गए।

उधर पिताजी तड़पने लगे तो चाचा के लड़के को फोन करके बुलाई और पिताजी को ओबरा परियोजना अस्पताल ले जाया गया जहां पहुंचते ही डाक्टरों ने उसके पिता रामनारायण यादव को मृत घोषित कर दिया। इस तहरीर पर 21 फरवरी 2014 को शाम आठ बजे ओबरा पुलिस ने पुष्पेंद्र उर्फ बंटी दुबे पुत्र सुनील दुबे निवासी पट्टी दयाल मुरादपुर, थाना बदलापुर जिला जौनपुर समेत छह लोगों के विरुद्ध एफआईआर दर्ज कर मामले की विवेचना किया। पर्याप्त सबूत मिलने पर विवेचक ने न्यायालय में चार्जशीट दाखिल किया था। मामले की सुनवाई करते हुए अदालत ने दोनों पक्षों के अधिवक्ताओं के तर्कों को सुनने, गवाहों के बयान व पत्रावली का अवलोकन करने पर दोषसिद्ध पाकर दोषी पुष्पेंद्र उर्फ बंटी दुबे को उम्रकैद व 10 हजार रूपये अर्थदंड की सजा सुनाई। अर्थदंड न देने पर 6 माह की अतिरिक्त कैद भुगतनी होगी। वहीं पांच अन्य आरोपियों को साक्ष्य के अभाव में दोषमुक्त करार दिया। अभियोजन पक्ष की ओर से अपर जिला शासकीय अधिवक्ता कुंवर वीर प्रताप सिंह ने बहस की।

आर्म्स एक्ट में भी पुष्पेंद्र को पांच वर्ष की कैद

10 लाख रुपये में मिली थी रामनारायण यादव के हत्या की सुपारी

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सोनभद्र। अपर सत्र न्यायाधीश प्रथम खलीकुज्जमा की अदालत ने शुक्रवार को आर्म्स एक्ट के मामले में सुनवाई करते हुए दोषसिद्ध पाकर दोषी पुष्पेंद्र उर्फ बंटी दुबे को पांच वर्ष की कैद व 10 हजार रूपये अर्थदंड की सजा सुनाई। अर्थदंड न देने पर छह माह की अतिरिक्त कैद भुगतनी होगी। जेल में बिताई अवधि सजा में समाहित की जाएगी। अभियोजन पक्ष के मुताबिक 19 मई 2014 को ओबरा एसओ अनिल कुमार यादव ने दी तहरीर में अवगत कराया था कि वे पुलिस बल के साथ वांछित अभियुक्तों की तलाश में थे कि तभी मुखबिर के जरिए सूचना मिली कि रामनारायण यादव हत्याकांड में शामिल अभियुक्त टाटा सफारी गाड़ी से घूम रहे है अगर घेराबंदी की जाए तो पकड़े जा सकते है। इस सूचना पर घोरावल एसओ भारत भूषण तिवारी को पुलिस बल के साथ खैरटीया बंधे के पास बुलाया। जब दोनों लोग बातचीत कर रहे थे और वाहनों की चेकिंग कर रहे थे तभी एक सफारी गाड़ी आई जिसे घेरकर रोक लिया गया। चालक अंधेरे का फायदा उठाकर भागने में सफल हो गया। पुष्पेंद्र उर्फ बंटी दुबे समेत चार लोगों को पुलिस ने पकड़ लिया। पुष्पेंद्र के कब्जे से रामनारायण यादव हत्याकांड में प्रयुक्त असलहा भी बरामद कर लिया। रामनारायण यादव की हत्या करने के लिए 10 लाख रूपये की सुपारी दी गई थी। शेष बकाए रूपये को लेने के लिए आए थे कि पुलिस ने पकड लिया। इसी मामले में पुष्पेंद्र उर्फ बंटी दुबे को आर्म्स एक्ट में दोषसिद्ध पाते हुए अदालत ने पांच वर्ष की कैद व 10 हजार रूपये अर्थदंड की सजा सुनाई। अर्थदंड न देने पर छह माह की अतिरिक्त कैद भुगतनी होगी। जेल में बिताई अवधि सजा में समाहित की जाएगी। अभियोजन पक्ष की ओर से अपर जिला शासकीय अधिवक्ता कुंवर वीर प्रताप सिंह ने बहस की।

थानाध्यक्ष छावनी ने किया जनसुनवाई

दैनिक बुद्ध का संदेश

बस्ती। पुलिस अधीक्षक बस्ती आशीष श्रीवास्तव के आदेश के

क्रम मे जनपद बस्ती व अपर पुलिस अधीक्षक बस्ती दीपेन्द्रनाथ चौधरी के निर्देश में क्षेत्राधिकारी हरैया शेषनाथ मणि उपाध्याय के निकट पर्यवेक्षण मे थानाध्यक्ष छावनी दुर्गेश पांडेय के नेतृत्व में शांति व्यवस्था को दृष्टिगत रखते हुये कई गांवों में मौके पर जाकर लोगों की समस्याओं को सुना गया एवं उनकी समस्याओं का त्वरित निस्तारण किया गया। क्षेत्रीय जनता में थानाध्यक्ष छावनी के सराहनीय कार्य से खुश हैं।

जिलाधिकारी ने किया जिला टास्क फोर्स समिति की बैठक

दैनिक बुद्ध का सन्देश

गौतम बुद्धनगर। जिलाधिकारी ने बैठक की अध्यक्षता करते हुए स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को दिए आवश्यक दिशा निर्देश। उत्तर प्रदेश सरकार के माननीय मुख्यमंत्री जी की मंशा के अनुरूप गौतम बुद्ध नगर में स्वास्थ्य कार्यक्रमों को गुणवत्ता परक रुप से संचालित कराने के उद्देश्य से जिलाधिकारी गौतम बुद्ध नगर मनीष कुमार वर्मा की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट के सभागार में जिला टास्क फोर्स समिति की बैठक संपन्न हुई। उन्होंने बैठक की अध्यक्षता कहा कि विशेष टीकाकरण पखवाड़ा में शून्य से 5 वर्ष तक के बच्चों, जिनका टीकाकरण नहीं हुआ है उन्हें चिन्हित करते हुये डोर टू डोर अभियान संचालित कर टीकाकरण किया जाए। विशेष टीकाकरण पखवाड़ा में आशा, सुपरवाइजर एवं एएनएम द्वारा आपसी सामंजस्य स्थापित करते हुए अपने–अपने क्षेत्र में अभियान चलाया जाए, जिससे कोई भी बच्चा टीकाकरण से वंचित न रहे। इस कार्यक्रम को सफल बनाने के संबंध में जिलाधिकारी ने स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार के माननीय मुख्यमंत्री जी की मंशा के अनुरूप विशेष टीकाकरण पखवाड़ा का डोर टू डोर अभियान संचालित करते हुए सर्वे का कार्य सुनिश्चित किया जाएगा ताकि चिन्हित बच्चों को स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ सरकार की मंशा के अनुरूप उपलब्ध कराया जा सके। उन्होंने कहा कि 0 से 05 वर्ष के आयु के छूटे हुए बच्चे जिनका टीकाकरण नहीं हुआ है कि घर–घर जाकर बच्चों को चिन्हित कर सूचीबद्ध किया जाये। जिला अधिकारी ने इस महत्वपूर्ण अभियान को जनपद में सफल बनाने के उद्देश्य से मुख्य चिकित्सा अधिकारी एवं स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को समय रहते सभी टीमों का गठन करते हुए गुणवत्ता परक रूप से इस कार्य को पूरा कराने के लिए निर्देश दिए हैं ताकि चिन्हित बच्चों को सरकार की स्वास्थ्य सेवाओं का भरपूर लाभ समयबद्धता के साथ उपलब्ध कराया जा सके। इस महत्वपूर्ण बैठक में परियोजना निदेशक गरिमा खरे, मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ सुनील शर्मा, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी एश्वर्या लक्ष्मी, जिला विद्यालय निरीक्षक धर्मवीर सिंह, जिला प्रोबेशन अधिकारी अतुल कुमार सोनी तथा अन्य सम्बन्धित विभागीय अधिकारियों के द्वारा प्रतिभाग किया गया।

विधिक जागरूकता एवं साक्षरता शिविर का हुआ आयोजन

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सोनभद्र।ओबरा तहसील के प्रांगण में शुक्रवार को राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण एवं राष्ट्रीय महिला आयोग के संयुक्त रुप से अंतराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में साप्ताहिक कार्यक्रम में विधिक जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। विधिक जागरूकता शिविर को संबोधित करते हुए जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव अपर जिला न्यायाधीश सत्य जीत पाठक ने कहा कि महिलाओं में महिलाओं के सम्मान के लिए यह दिवस मनाया जाता है। उन्होंने महिलाओं के अधिकारों की जानकारी देते हुए कहा कि कानून में पुरुषों की भांति महिलाओं को भी बराबर के अधिकार दिये हैं। इसके अलावा भी महिलाओं के लिए अलग से भी कई कानून बनाये गये है महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक रहना चाहिए। सचिव अपर जिला न्यायाधीश ने अपने सम्बोधन में कहा की आज की महिलाये पुरुषो से कंधे से कन्धा मिलाकर चल रहीं हैं, लेकिन आज भी कई ऐसे मुद्दे है जिनसे महिलाये जूझ हैं, शिक्षा का न मिल पाना, भेदभाव, रूढ़िवादी सोच, दर्दनाक बढ़ते अपराध आदि जैसे अपराधों से जूझ कर निकल रहीं हैं, इसमें बदलाव लाने के लिए कानूनों का सख्ती से पालन किया जाय, बढ़ते अपराधों पर रोक लगाई जाये, लक्ष्मी जैसी कई अदम्य महिलाये जो एसिड अटैक का शिकार हुई हैं, लेकिन आम जिंदगी जीना पसंद करती हैं और दुसरो के लिए रोल मॉडल बनी हैं, हमें महिलाओ का सम्मान जेंडर के कारण नहीं बल्कि उसकी स्वयं कि पहचान के लिए करना होगा वहा उपस्थित मातृ शक्ति से आह्वान किया कि वे बेटी व बेटे में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं करें और बेटे की भांति बेटी को भी समान शिक्षा, खान–पान सहित अन्य सुविधाएं उपलब्ध करवाये। इस अवसर पर उप जिलाधिकारी ओबरा राजेश कुमार सिंह, तहसीलदार ओबरा सुनील कुमार, सी0 पी0 द्विवेदी, नागेंद्र द्विवेदी, दीपेश दीक्षितीत चौबे, धर्मराज सिंह, गीतांजलि चौबे, शिक्षिका सुमन सिंह, संध्या साई, जिला समन्वयक प्रोबशन कार्यालय साधना मिश्रा, सहित अन्य सम्बंधितगण उपस्थित रहीं।

जिलाधिकारी ने किया मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना कोविड–19 में के 29 आवेदनपत्रों को स्वीकृति

दैनिक बुद्ध का सन्देश

गौतम बुद्धनगर। जिलाधिकारी ने मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना कोविड–19ध्सामान्य के 29 आवेदनपत्रों को भुगतान दिए जाने के लिए किया स्वीकृत।जिलाधिकारी मनीष कुमार वर्मा की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना कोविड–19ध सामान्य से संबंधित जिला टास्क फोर्स समिति की बैठक संपन्न हुई, जिसमें प्रभारी मुख्य विकास अधिकारी गरिमा खरे, प्रभारी जिला कार्यक्रम अधिकारी, बाल कल्याण समिति के अध्यक्ष के.सी. विरमानी तथा अन्य संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे। जिला प्रोबेशन

अधिकारी अतुल कुमार सोनी ने जानकारी देते हुए बताया कि बैठक में मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना कोविड–19 के तहत 13 आवेदन पत्र सामान्य के अंतर्गत कुल 16 आवेदन पत्रों को उप जिलाधिकारी एवं खंड विकास अधिकारी के स्तर से सत्यापन उपरांत प्राप्त कुल 29 आवेदनपत्रों को भुगतान दिये जाने के लिए जिलाधिकारी के द्वारा स्वीकृति प्रदान की गयी है। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना (कोविड–19) योजनांतर्गत कुल 57 आवेदनपत्रों को तथा मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना (सामान्य) के अन्तर्गत 346 आवेदनपत्रों को स्वीकृत कर लाभान्वित किया जा रहा है।जिला प्रोबेशन अधिकारी अतुल कुमार सोनी ने जनसामान्य का आह्वान करते हुए कहा कि उक्त योजनांतर्गत 01 मार्च 2020 के बाद के ऐसे बच्चे जिनके माता–पिता दोनों अथवा माता या पिता में से किसी एक अभिभावक को खो दिया है। ऐसे बच्चों के भरण–पोषण चिकित्सा व शिक्षा आदि की व्यवस्था के लिए शासन द्वारा उत्तर प्रदेश मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना कोविड–19 के अन्तर्गत रू0 4000ध्माह की आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है तथा मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना (सामान्य) योजनान्तर्गत रू० 2500ध्आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है। इच्छुक पात्र व्यक्ति आवेदन के लिए कार्यालय जिला प्रोबेशन अधिकारी, प्रथम तल, पुरानी कोर्ट, फेस–2, नोएडा में संपर्क कर सकते हैं।

बुद्ध का संदेश
(हिन्दी दैनिक समाचार पत्र)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती पुष्पा शर्मा द्वारा बुद्धा प्रिन्टर्स , ज्योति नगर मधुकरपुर, निकट–हीरो होण्डा एजेन्सी, जनपद–सिद्धार्थनगर (उ0प्र0) 272207 से मुद्रित एवं प्रकाशित।
आर.एन.आई. नं.–UPHIN/2012/49458

संस्थापक
स्व. के.सी. शर्मा
सम्पादक
राजेश कुमार शर्मा

9415163471, 9453824459
दैनिक बुद्ध का संदेश
9795951917,9415163471
@budhakasandesh
budhakasandeshnews@gmail.com
www.budhakasandesh.com

इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी.एक्ट. के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन समस्त विवाद जनपद–सिद्धार्थनगर न्यायालय के अधीन ही मान्य होगा।

जनपद सिद्धार्थनगर के महत्वपूर्ण नम्बर

जिलाधिकारी	मो0:– 9454417530
मुख्य विकास अधिकारी	मो0:– 9454464749
एस डीएम नौगढ़	मो0:– 9454415936
एस डीएम बांसी	मो0:– 9454415937
एस डीएम डुमरियागंज	मो0:– 9454415939
एस डीएम इटवा	मो0:– 9454415939
एस डीएम शोहरतगढ़	मो0:– 9454415940
पुलिस अधीक्षक	मो0:– 9454400305
थाना मोहाना	मो0:– 9454404239
थाना जोगिया उदयपुर	मो0:– 9454404235
थाना गोलौरा	मो0:– 9454404233
थाना पथरा बाजार	मो0:– 9454404240
थाना त्रिलोकपुर	मो0:– 9454404243
थाना उसका बाजार	मो0:– 9454404244
थाना शोहरतगढ़	मो0:– 9454404241
थाना खेसरहा	मो0:– 9454404236
थाना इटवा	मो0:– 9454404234
थाना चिल्हिया	मो0:– 9454404229
थाना ढेबरूआ	मो0:– 9454404230
थाना भवानीगंज	मो0:– 9454404228
थाना मिश्रौलिया	मो0:– 9454404238
थाना सि0नगर	मो0:– 9454404242
थाना डुमरियागंज	मो0:– 9454404232
थाना लोटन	मो0:– 9454404237
महिला थाना	मो0:– 9454404891

राष्ट्रीय दैनिक
बुद्ध का संदेश

भ्रष्टचार–बचाए बीजेपी सरकार, कांग्रेस का प्रदर्शन, बोला हमला

दैनिक बुद्ध का सन्देश

सोनभद्र। अडानी के पक्ष में भाजपा सरकार की क्रोनि कैपिटलिज्म नीति के खिलाफ रॉबर्ट्सगंज ब्लॉक कॉग्रेस कार्यकर्ताओं ने शुक्रवार को ब्लाक अध्यक्ष अमरेश देव पांडे के

नेतृत्व मे जमकर प्रदर्शन कर केंद्र सरकार पर जमकर बरसे काग्रेसी कॉग्रेस प्रवक्ता शत्रुंजय मिश्रा ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी और बीजेपी सरकार की अडानी के पक्ष में क्रोनि कैपिटलिज्म की नीति से आप सभी वाकिफ है। गहरे अर्थिक संकट मे भाजपा सरकार देश के महत्वपूर्ण ढांचे को अडानी समूह को बेच रही है, और एसबीआई, एलआईसी जैसे सार्वजनिक संस्थानों को निवेश के लिए मजबूर कर रही हैं। जिससे मध्यम और गरीब वर्ग के भारतीयों की करोडों की बचत जोखिम मे है। जनता की गाढ़ी कमाई को अपने उद्योगपति मित्रों को फायदा पहुचाने का कार्य कर रही मोदी सरकार को जनता सबक जरूर सिखाएगी। ब्लाक अध्यक्ष अमरेश देव कहा कि बीजेपी सरकार मे महंगाई, बेरोजगारी भ्रस्टाचार चरम पर है। सरकार अपने वादे से मुकर गई है। कॉग्रेस सरकार द्वारा बनाई गई संस्थानों और संस्थाओं को बेचने पर तुली हुई हैं। शहर अध्यक्ष राजीव त्रिपाठी ने कहा कि जब से बीजेपी सरकार सत्ता मे आई है तब से लोगों का जीना मुश्किल हो गया है। सरकार के तानाशाही रवैया से आमजन त्रस्त है। प्रदेश मे जंगलराज कायम हैं। उक्त मौके पर निगम मिश्रा, पंकज पटेल, शीतला पटेल, बुल्लू कोल, पंकज मिश्रा, प्रमोद पांडे, प्रदीप पटेल, विजय शंकर पांडे, ओम प्रकाश पांडे, धीरेन्द्र पांडे, कृपाशंकर पांडे, अमिताभ चौधरी, देवानंद विश्वकर्मा, अम्बुज कुमार, दशरथ देब पांडे, शिवानंद तिवारी, शिव मुनि सिंह, आशीष शुक्ला, रामा यादव, विजय पटेल, रामेश्वर शुक्ला, संतोष शुक्ला सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

सशस्त्र सीमा बल ने मानव वा पशु चिकित्सा सेवा शिविर का आयोजन

दैनिक बुद्ध का सन्देश

कपिलवस्तु,सिद्धार्थनगर। 43वीं वाहनी सशस्त्र सीमा बल एवं क्षेत्रक मुख्यालय के तत्वाधान में शुक्रवार को मानव वा पशु चिकित्सा सेवा शिविर

का आयोजन किया गया। कैंप कार्यालय बजहा क्षेत्र के मटियरिया गांव में मानव स्वास्थ शिविर में जीडीएमओ डा मानसी चतुर्वेदी ,पशु चिकित्सा शिविर में द्वितीय कमांड अधिकारी डा सुशांत साह जी पारेकर ने जांच कर दवा वितरित कराई। क्षेत्र के रक्सैल गांव में पशु चिकित्सा शिविर लगाया गया। जिसमे पशु में बकरी, भैंस, गाय का स्वास्थ परीक्षण किया गया। मटियरिया में मानव चिकित्सीय व्यवस्था के तहत 134 महिला, पुरुष के स्वास्थ की जांच कर दवा वितरित कराया गया। वही 230 पशु का इलाज किया गया। जिसमे रक्सैल गांव में 60 पशु शामिल रहें। डा पारेकर ने कहा सीमाई क्षेत्र के लोग पशु के स्वास्थ की निगरानी में शिथिलता बरतते है,गाय,भैंस,बकरियों के बाल में कई प्रकार के कीडे लगते है, जो उनके स्वास्थ को खराब कर देती है, इलाज के बाद इसके बचाव देख रेख की जानकारी दी गई, दौरान ए,सी राजपाल, बी ओ पी बजहा प्रभारी मुकेश कुमार चौधरी, एस आई हीरा सिंह, दीपांकर मंडल, रत्नेश, रंजीत पप्पू आदि जवान उपस्थित रहें।

अधिक कंडीशनिंग से बाल हो सकते हैं खराब, जानिए इससे बचने का तरीका

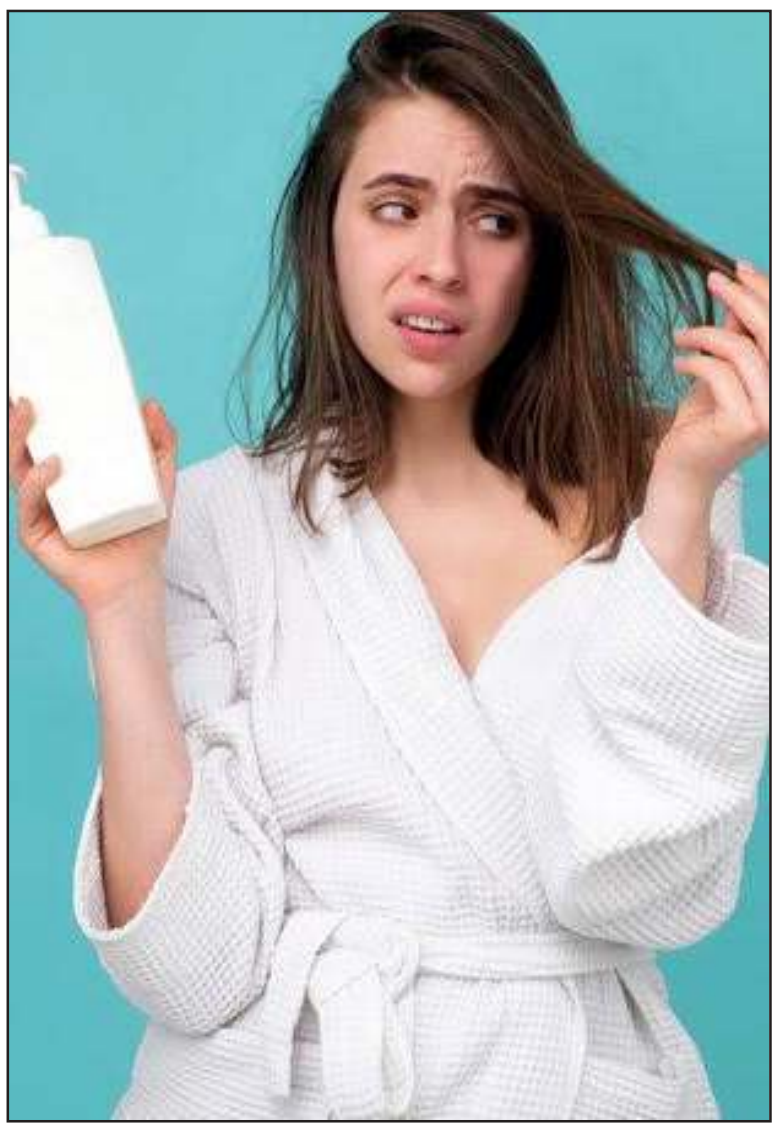

शैंपू के बाद कंडीशनर का इस्तेमाल करना बालों की देखभाल की दिनचर्या का अहम हिस्सा है। हालांकि, बालों को जरूरत से ज्यादा कंडीशन करने से ये शुष्क, बेजान व चिकने हो सकते हैं और इन्हें संवारने में भी दिक्कत हो सकती है। आइए, आज हम आपको बालों को ठीक से कंडीशन करने का तरीका और अधिक कंडीशनिंग के कारण होने वाले किसी भी नुकसान को ठीक करने के लिए कुछ उपयोगी सुझाव बताते हैं।

कंडीशनर का इस्तेमाल करना क्यों जरूरी है?

कंडीशनर का इस्तेमाल मुख्य रूप से बालों की सुरक्षा और इन्हें नमी देने के लिए किया जाता है। यह बालों पर एक परत बनाता है और स्कैल्प को पोषण देने और हाइड्रेट करने में मदद करता है। हालांकि, जब आप अधिक कंडीशनर का इस्तेमाल करने लगते हैं तो इससे बालों में अधिक नमी जुड़ जाती है, जिसके कारण बाल बहुत नरम हो जाते हैं और इनके टूटने की संभावना भी काफी बढ़ जाती है।

अधिक कंडीशनिंग से जुड़े संकेत

बालों का चिपचिपा दिखना अधिक कंडीशनिंग का सबसे आम संकेत है। दरअसल, जब आप अपने बालों पर जरूरत से ज्यादा कंडीशनर का इस्तेमाल करते हैं तो यह बालों और उसकी जड़ों को तैलीय बना देता है। ऐसे में बाल काफी चिपचिपे दिखने लगते हैं और बहुत जल्दी गंदे हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त, जरूरत से ज्यादा बालों का चमकना, बालों को संवारने में परेशानी होना और बालों के वॉल्यूम में कमी आना भी अधिक कंडीशनिंग की ओर इशारा करते हैं।

अधिक कंडीशनर से कैसे बचा सकता है?: बालों को अधिक कंडीशनिंग से बचाने के लिए सही मात्रा में कंडीशनर का इस्तेमाल करें और इसे अच्छी तरह से बालों से निकालना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त लगातार कंडीशनिंग से बचने की कोशिश करें और इसे लंबे समय तक अपने बालों पर न रहने दें। बालों से कंडीशनर को ठंडे पानी से साफ करें। रिंस–ऑफ कंडीशनर का इस्तेमाल करने के बाद लीव–इन हेयर कंडीशनर का इस्तेमाल करने से बचें।

अधिक कंडीशनिंग वाले बालों को ठीक करने के तरीके

बालों से अतिरिक्त कंडीशनर को हटाने के लिए अपने बालों को ठीक से शैंपू करना या ड्राई शैंपू का इस्तेमाल करें। वहीं महीने में एक बार अपने बालों को सेब के सिरके और पानी के मिश्रण से धोएं। अधिक कंडीशनिंग बाल कम दिखते हैं। ऐसे में प्रोटीन ट्रीटमेंट का इस्तेमाल करके बालों की मात्रा वापस आ सकती है और जड़े मजबूत हो सकतीहैं। साथ ही हेयर स्टाइलिंग और लीव–इन हेयर उत्पादों के इस्तेमाल को भी सीमित करें।

फलों के साथ इन सब्जियों को रखने की न करें गलती, फ्रिज में रहने के बाद भी जल्दी हो जाती हैं खराब

फ्रिज सही होने के बाद भी अक्सर सब्जियां जल्दी खराब हो जाती हैं। अगर आपके साथ भी ऐसा हो रहा है तो यह आर्टिकल आपके लिए है। आपको बता दें कि फलों और सब्जियों में अगल–अलग तरह के केमिकल और एंजाइम पाया जाता है। ऐसे में फलों और सब्जियों को साथ में रखने से यह जल्दी खराब होने लगती हैं। इसलिए फ्रिज में फल और सब्जियों को एकसाथ नहीं रखना चाहिए। आज इस आर्टिकल में हम आपको कुछ ऐसे फलों और सब्जियों के बारे में बताने जा रहे हैं। जिनको लंबे समय तक फ्रिज में फलों के साथ नहीं रखना चाहिए।

ब्रोकली: ब्रोकली एथिलीन सेंसिटिव सब्जी होती है। अगर आप इसके साथ एथिलीन बनाने वाले फलों सेब, अंगूर और अंजीर के साथ रखते हैं तो 50 प्रतिशत तक इसकी लाइफ लाइन कम हो जाती है। इसलिए फ्रिज में इसे स्टोर करने के बाद भी यह 2 से 3 दिन में खराब होने लगती है।

पत्तेदार सब्जियां: पत्तेदार सब्जियों को ताजा रखने के लिए काफी सावधानी बरतनी होती है। क्योंकि यह भी एथिलीन सेंसिटिव सब्जियां होती हैं। इसलिए पत्तेदार सब्जियों को अंगूर, सेब और तरबूज आदि फलों के साथ स्टोर करने से बचना चाहिए। इन फलों के साथ पत्तेदार सब्जियां रखने से यह ज्यादा समय तक ताजी नहीं रह पाती हैं। लौकी : लौकी भी एथिलीन सेंसिटिव होती है। इसलिए लौकी को सेब, अंजीर, नाशपाती और अंगूर आदि फलों के साथ फ्रिज में नहीं रखना चाहिए। क्योंकि यह एथिलीन को रिलीज करने का काम करते हैं। इससे लौकी लंबे समय तक फ्रेश नहीं रह पाती है। पत्तागोभी: पत्तागोभी को ताजा रखने के लिए फ्रेश एयर की आवश्यकता होती है। बता दें कि पत्तागोभी भी एथिलीन सेंसिटिव सब्जियों में आती है। इसलिए इसको खरबूजे, कीवी और सेव आदि फलों के साथ नहीं रखना चाहिए।

अंतरंग पलों का मजा किरकिरा कर सकता है दर्द, एक्सपर्ट्स से जानें पुरुषों को फिमोसिस सर्जरी जरूरी है या नहीं

कई बार पुरुषों को संबंध बनाने में काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है। जिस कारण वह अंतरंग पलों का मजा नहीं ले पाते हैं। जिन पुरुषों को ऐसी समस्या होती है, वह एक्सपर्ट्स की सलाह पर फिमोसिस सर्जरी करवा सकते हैं। कई बार संबंध बनाने के दौरान जब दर्द शुरू हो जाता है तो वह दर्द फिर अंतरंग पलों का मजा किरकिरा कर देता है। बता दें कि पुरुषों की ऐसी ही एक दर्दभरी समस्या फिमोसिस है। इस समस्या के कारण पुरुषों को संबंध बनाने में परेशानी का सामना करना पड़ता है। लेकिन फिमोसिस क्या है और इसके द्वारा होने वाली तकलीफ पर क्या उपाय जरूरी हैं। इसके बारे में सेक्सोलॉजिस्ट डॉ. राजन भोसले ने पूरी जानकारी दी है। आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको डॉ. भोसले द्वारा बताई गई जानकारी आपके साथ साझा करने जा रहे हैं। ऐसे में अगर आप भी फिमोसिस की समस्या से परेशान रहते हैं तो इससे राहत पा सकते हैं।

जानिए क्या कहते हैं स्पेशलिस्ट

डॉ. भोसले ने बताया कि उनके पास ऐसे कई केस आते हैं। जिसमें लोग शादी से पहले फिमोसिस की सर्जरी कराने की सोच रहे हैं। साथ ही उन्होंने यह भी जानने का प्रयास किया कि फिमोसिस क्या है और इसके लिए सर्जरी की आवश्यकता क्यों है। क्या यह सर्जरी सभी पुरुषों के लिए जरूरी है या नहीं और इसका फिजिकल रिलेशन पर कैसा असर पड़ता है। डॉ. भोसले के अनुसार, पहली बार संबंध बनाने में कई पुरुषों को तकलीफ होती है। वहीं जिन पुरुषों में दर्द ज्यादा होता है तो उन्हें फिमोसिस सर्जरी करवाने की सलाह दी जाती है।

फिमोसिस को कह सकते हैं खतना: अगर आम बोलचाल की भाषा में समझा जाए तो इसे खतना भी कहते हैं। यह सर्जरी काफी छोटी होती है। इसमें प्राइवेट पार्ट के ऊपर की स्किन निकाल दी जाती है। जिसके कारण पुरुषों को संबंध बनाने में आसानी होती है। यौन उत्तेजना के प्रति सबसे अधिक संवेदनशील प्राइवेट पार्ट का शुरुआती हिस्सा होता है। जिसमें सबसे ज्यादा न्यूरो–रिसेप्टर होते हैं। वहीं कई पुरुषों को इस सर्जरी की आवश्यकता नहीं होती है। बचपन में मालिश किए जाने के दौरान या युवा होने पर मास्टरबेशन से ये स्किन आसानी से पीछे हो जाती है।

काफी छोटी होती है सर्जरी

हालांकि जिन पुरुषों की स्किन पीछे नहीं हो पाती हैं, उन्हें संबंध बनाने में परेशानी का सामना करना पड़ता है। जिसके कारण इस सर्जरी की जरूरत होती है। यह सर्जरी काफी छोटी होती है। इसलिए इसको लेकर परेशान नहीं होना चाहिए। डॉ. भोसले ने बताया कि जिन पुरुषों को ऐसी समस्या होती है, वह चाहें तो अपने मंगेतर के साथ संबंध बनाने के बाद भी यह फैसला ले सकते हैं। वहीं अगर पुरुषों को संबंध बनाने के दौरान दर्द का एहसास नहीं होता है तो उन्हें फिमोसिस सर्जरी की जरूरत नहीं होती है। इस बारे में आप अपने पार्टनर से खुलकर बात करें और साथ ही एक्सपर्ट्स की सलाह जरूर लें।

तेजस्वी प्रकाश और करण कुंद्रा का हुआ ब्रेकअप! एक्टर की पोस्ट ने उड़ाईं फैंस की नींद, अब सच्चाई आयी सामने

बिग बॉस 15 के शो में करण और तेजस्वी दो मजबूत प्रतियोगी थे जहां करण बिग बॉस के दूसरे रनर–अप के रूप में उभरे और तेजस्वी को शो का विजेता घोषित किया गया। प्रशंसकों ने उनकी केमिस्ट्री को पसंद किया और उन्हें एक प्यारा हैशटैग रुज्मरत्द नाम दिया। अब, इश्क में घायल अभिनेता की हालिया पोस्ट ने कुछ अफवाहें उड़ाई हैं। पोस्ट से ऐसा महसूस होता है कि तेजरन अलग हो गये हैं। प्रशंसक उम्मीद कर रहे हैं कि तेजरान के बीच सब ठीक है और यह सिर्फ एक और सोशल मीडिया पोस्ट है जिसमें उनके अलग होने का कोई सच नहीं है। कुछ प्रशंसक यहां तक प्रार्थना कर रहे हैं कि यदि कोई मतभेद हैं तो युगल को अपने मतभेदों को सुलझा लेना चाहिए। करण कुंद्रा और तेजस्वी प्रकाश टेली टाउन के सबसे प्यारे कपल्स में से एक हैं। यह दोनों बिग बॉस 15 के घर के अंदर मिले और तुरंत ही दोनों के बीच प्यार हो गया। ब्रेकअर की खबरों पर अब आखिरकार तेजस्वी प्रकाश ने अपनी बात रखी है। करण कुंद्रा ने मंगलवार रात एक ट्वीट साझा किया। यह एक शायरी थी। ट्वीट में लिखा था, ष्ना तेरी शान कम होती..न रुतबा घाटा होता.. जो गम में कहा.. वही हस के कहा होता।ष करण के पोस्ट के बाद फैन्स ने इस पर अपनी प्रतिक्रिया देकर अपनी चिंता जाहिर की। जबकि कुछ ने सवाल किया कि क्या इसका उनके रोमांस से कोई लेना–देना है, दूसरों ने उन्हें आम जनता के सामने अभिनेता का अपमान करने के लिए फटकार लगाई। अब प्रशंसकों के लिए यह अच्छी खबर है, और वे अब शांति से रह सकते हैं क्योंकि तेजस्वी ने आखिरकार इस मामले पर अपनी बात रखी है। तेजस्वी ने स्पष्ट किया कि जोड़ी के बीच सब कुछ ठीक है और साझा किया कि वे एक–दूसरे की कंपनी का आनंद ले रहे हैं और मजबूत हो रहे हैं। तेजस्वी प्रकाश ने जूम को दिए एक लेटेस्ट इंटरव्यू में करण संग अपने ब्रेकअप को खारिज कर दिया है। उनका कहना है कि वह करण के साथ प्यार में हैं और दिन ब दिन उनका रिश्ता मजबूत होता जा रहा है। तेजस्वी ने करण संग अपनी शादी का भी हिंट दिया है। उन्होंने कहा, "मैं प्यार में हूं। मैं थोड़ी अंध ाविश्वासी हूं। मुझे लगता है कि जितना ज्यादा मैं इसके बारे में बात करूंगी, उतने ही ज्यादा लोग आपके जीवन की खूबसूरत चीजों पर नजर लगाएंगे। शादी करना मेरी जिंदगी में बहुत जरूरी चीज है. मुझे नहीं लगता कि मैं इसके बारे में तब तक बात करना चाहूंगी जब तक कि यह वास्तव में नहीं हो जाता।"

जान्हवी कपूर ने किया अपने तेलुगू डेब्यू का ऐलान, फिल्म एनटीआर 30 से फर्स्ट लुक जारी

जान्हवी कपूर अपने 26वां जन्मदिन की खास मौके पर तेलुगू किया है। वह जूनियर एनटीआर की आगामी फिल्म एनटीआर 30 जान्हवी ने फिल्म से अपना फर्स्ट लुक भी साझा किया है। उन्होंने इंस्टाग्राम पर तस्वीर साझा की है, जिसके कैप्शन में जान्हवी ने आखिरकार हो रहा है। मेरे पसंदीदा जूनियर एनटीआर के साथ लिए इंतजार नहीं कर सकती। इस फिल्म का निर्देशन दक्षिण जाने–माने निर्देशक कोराताला शिवा कर रहे हैं। वह पिछले 6 अभिनेत्री की तलाश कर रहे थे और कई नामों पर विचार करने के को साइन किया। यह फिल्म तेलुगु के साथ तमिल, मलयालम और भाषाओं में रिलीज होगी। रिपोर्ट्स के मुताबिक, 23 फरवरी से फिल्म

डेब्यू का ऐलान में नजर आएंगी। अपने आधिकारिक लिखा, यह यात्रा शुरू करने के भारतीय सिनेमा के महीने से इसके लिए बाद उन्होंने जान्हवी हिंदी समेत कई की शूटिंग शुरू हो गई है और फिल्म 2024 में दर्शकों के बीच आएगी।

जाह्नवी कपूर ने एक बार अपने इंटरव्यू में जूनियर एनटीआर के साथ काम करने की अपनी ख्वाहिश का जिक्र किया था, तभी से ये चर्चा थी कि एक्ट्रेस जल्द ही साउथ सिनेमा में कदम रखने जा रही हैं. हालांकि उनके पिता बोनी कपूर ने इन तमाम खबरों को सिरे से खारिज कर दिया था कि उनकी बेटी जाह्नवी कपूर कोई साउथ फिल्म साइन करने नहीं जा रही हैं. खैर अब जाह्नवी ने ही एनटीआर 30 से अपना फर्स्ट लुक पोस्टर शेयर कर इस बात की ऑफिशियल घोषणा कर दी है कि वो साउथ सिनेमा में डेब्यू करने के साथ, जूनियर एनटीआर के साथ स्क्रीन शेयर करने जा रही हैं. जाह्नवी ने इस पोस्ट के साथ अपनी एक्साइटमेंट का भी जिक्र कैप्शन में कर दिया है.

बता दें, जाह्नवी कपूर जल्द ही राणा दग्गुबाती के साथ वेब सीरीज राणा नायडू में भी नजर आने वाली हैं. नेटफ्लिक्स पर रिलीज होने वाली इस सीरीज का हाल ही में एक टीजर रिलीज हुआ था जिसमें ये खुलासा हुआ की जाह्नवी इस वेब सीरीज में अहम रोल प्ले करने जा रही हैं. इसके अलावा एक्ट्रेस बॉलीवुड फिल्म बवाल और मिस्टर एंड मिसेज माही में भी नजर आएंगी.